Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24
website- www.dvpnews.in
रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 158 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, बुधवार 11 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

हमारा विकास धर्म की शरण में होता है, धन की शरण में नहीं।

Our development is wasted in taking refuge of riligion but not of wealth.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

राज्यसभा सभापति धनखड़ के खिलाफ लाया गया अविश्वास प्रस्ताव, विपक्ष ने दिया नोटिस

नई दिल्ली (आरएनएस)। संसद का शीतकालीन सत्र जारी है. मंगलवार को संसद के दोनों सदन बुधवार तक के लिए स्थगित कर दिए गए. हालांकि इससे पहले विपक्ष ने राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश कर दिया. दरअसल, विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति के कामकाज से नाराज होकर सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का फैसला लिया है. इस प्रस्ताव में सभापति पर सदन में पक्षपातपूर्ण कामकाज का आरोप लगाया गया है. इसके लिए विपक्ष ने अनुच्छेद 67(बी) के तहत अविश्वास प्रस्ताव को सदन में पेश किया. राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर विपक्ष के करीब 70 सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं. जिसमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी समेत अन्य कई छोटे दल भी इसे लेकर एकजुट हैं.

चरगढ़ जलाशय परियोजना के कार्य के लिए 4.61 करोड़ रुपये स्वीकृत

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ शासन ने राज्य के बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के अंतर्गत राजपुर की चरगढ़ मध्यम जलाशय परियोजना के सर्वेक्षण कार्य के लिए 4 करोड़ 61 लाख 76 हजार रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। जल संसाधन विभाग मंत्रालय महानदी भवन ने परियोजना का सर्वे कार्य कराने के लिए मुख्य अभियंता हसदेव गंगा कछार जल संसाधन विभाग को प्रशासकीय स्वीकृति जारी की है।

मुंबई में बेस्ट बस ने सड़क पर पैदल यात्रियों और कई वाहनों को कुचला, 7 की मौत

मुंबई (आरएनएस)। मुंबई के कुर्ला में बड़ा हादसा हुआ है। बेस्ट की इलेक्ट्रिक बस का ब्रेक फेल हो गया। इसके बाद बेकाबू बस ने करीब 200 मीटर के दायरे में आए राहगिरों से लेकर गाड़ियों तक को टक्कर मार दी। हादसा इतना भयावह था कि बस की चपेट में आए 7 लोगों की मौत हो गई। हादसे में 48 लोग घायल हैं। पुलिस के भी 4 जवान घायल हुए थे, जिनकी हालत सामान्य है। इस हादसे में जिन 7 की मौत हुई है। कुछ मृतकों की पहचान हो गई है। पुलिस ने बताया कि मृतकों में शिवम कश्यप (18), कनीज फातिमा (55), अफील शाह (19) और अनम शेख (20) के रूप में हुई है। बाकी मृतकों की पहचान सामने आना बाकी है।

शहीद वीर नारायण सिंह का बलिदान हम सबके लिए प्रेरणादायक : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

शहादत दिवस एवं सोनाखान मड़ई मेला के लिए 15 लाख रूपये देने की घोषणा

मुख्यमंत्री साय ने शहीद वीर नारायण सिंह शहादत दिवस पर उन्हें दी श्रद्धांजलि

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय 10 दिसम्बर मंगलवार को छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह के शहादत दिवस पर उनकी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि सोनाखान में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय सोनाखान स्थित शहीद स्मारक में शहीद वीर नारायण सिंह क़ी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने शहीद वीर नारायण सिंह संग्रहालय का भी अवलोकन किया। उन्होंने श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शहीद वीर नारायण सिंह के वंशजो को सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सोनाखान में पोस्ट मेट्रिक छात्रावास खोलने,सोनाखान मड़ई मेला के लिए 15 लाख देने,23 पर्यटन एवं ऐतिहासिक स्थलों में हाई मास्ट लाईट लगाने,सोनाखान के 3 तालाबों का अमृत सरोवार में उन्नयन तथा शहीद वीर नारायण के वंशज जो पेंशन के लिए वंचित हैं उन सभी सदस्यों को भी पेंशन देने क़ी घोषणा क़ी। इसके साथ ही 10 हितग्राहियों को पीएम आवास ग्रामीण की चॉबी सौंपा। हितग्राहियो को आयुष्मान कार्ड का वितरण,पीएम जनमन आदर्श पंचायत बल्दाकछार एवं औवराई का सम्मान, आदिवासी समाज के युवा प्रतिभावान छात्रों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा की शहीद वीर नारायण सिंह के जन्म एवं कर्मभूमि में मुख्यमंत्री के तौर पर पहली बार आया हूं। यह पवित्र भूमि गरीबों के लिए बलिदान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि शहीद वीर नारायण सिंह गरीबों की प्राण रक्षा एवं आत्मसम्मान के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिए जो हम सब के लिए प्रेरणादायक है। जिस समय सोनाखान क्षेत्र में आकाल पड़ा तो भूख से तड़पते लोगों क़ी दशा देखकर द्रवित हो गए और गोदाम से अनाज निकाल कर बाँट दिए। उन्होंने अंग्रेजो क़े विरुद्ध क्रांति का बिगुल फूंका दिए। अंग्रेजी सरकार ने 10 दिसम्बर 1857 को रायपुर क़े जय स्तम्भ चौक में फांसी दे दी गई। उन्होंने कहा कि शहीद वीर नारायण सिंह जैसे अनेक जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए है जिन्हे उचित सम्मान नहीं मिल पाया था लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जनजाति विभूतियों को सम्मान देने क़ा काम कर रहे है। प्रधानमंत्री ने 15 नवम्बर को जनजातीय गौरव दिवस मनाने क़ी घोषणा क़ी है। विशेष पिछडी जनजाति समुदाय क़े लोगों क़े विकास क़े लिए प्रधानमंत्री जनमन योजना शुरू किया गया है। पीएम ग्राम उत्कर्ष योजना के तहत प्रदेश क़े 6 हजार गाँवो को लाभ मिलेगा।मुख्यमंत्री ने कहा कि रायपुर में 9 करोड़ क़ी लागत से शहीद वीर नारायण संग्रहालय का निर्माण किया जा रहा है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। हमारी सरकार ने एक साल में मोदी क़ी गारंटी क़े तहत अधिकांश वायदे पूरा कर दी है।

● सोनाखान में खुलेगा पोस्ट मेट्रिक छात्रावास, 23 पर्यटन एवं ऐतिहासिक स्थलों में लगेंगे सोलर हाई मास्ट लाईट

● हम होंगे कामयाब के तहत 13 युवाओं को सम्मान पत्र, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 10 हितग्राहियों को सौंपा चाबी

● पीएम जनमन आदर्श पंचायत के तहत 2 गांव के पंचायत प्रतिनिधियों का हुआ सम्मान

उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने कहा कि शहीद वीर नारायण सिंह अन्याय और अत्याचार के खिलाफ अंग्रेजो से लड़ाई लड़ी। उनका बलिदान इतिहास में अमर रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी आदिवासी समाज के विकास और सम्मान क़े लिए काम कर रहे हैं। अब जनजातीय गौरव दिवस मनाया जा रहा है। आज देश क़ा प्रथम नागरिक आदिवासी समाज क़ी बेटी है तथा प्रदेश का मुखिया भी आदिवासी किसान का बेटा है।कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने कहा कि वर्ष 2003 से पहले सोनाखान बहुत पिछड़ा क्षेत्र था। हमारी सरकार आने क़े बाद यहाँ तेजी से विकास शुरू हुआ। सभी बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है।आज एक आदिवासी किसान का बेटा प्रदेश का कमान संभाल रहे है और विकास क़ी गंगा बहा रहे हैं।

इस अवसर पर जिले क़े प्रभारी मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा, केशकाल विधायक नीलकंठ टेकाम,पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल, पूर्व विधायक शिवरतन शर्मा,पूर्व विधायक सनम जांगड़े, पूर्व विधायक शिशुपाल सोरी,शहीद वीर नारायण सिंह के वंशज राजेंद्र दीवान, पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में सामाजिक जन उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 13 दिसंबर को 7 हजार करोड़ की 600 से अधिक परियोजनाओं का देंगे तोहफा

प्रयागराज (आरएनएस)। महाकुम्भ की औपचारिक शुरुआत के लिए 13 दिसंबर को प्रयागराज आने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सात हजार करोड़ की 600 से अधिक परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे। पीएम संगम तट पर बटन दबाकर इन परियोजनाओं की शुरुआत करेंगे। प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने इसकी सूची तैयार कर पीएम कार्यालय को भेज दी है।

प्रधानमंत्री 13 दिसंबर को प्रयागराज में लगभग साढ़े तीन घंटे रहेंगे। इस दौरान विधिवत गंगा पूजन के साथ महाकुम्भ की शुरुआत करेंगे। संगम तट पर सभास्थल से वो सात हजार करोड़ की 600 से अधिक परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे। इसमें हनुमान मंदिर कॉरिडोर का फेज वन, भरद्वाज कॉरिडोर, शृंग्वेरपुर कॉरिडोर शामिल हैं। वहीं इसके साथ ही 12 आरओबी-आरयूबी का भी लोकार्पण करेंगे। फिलहाल सूबेदारगंज आरओबी और आईईआरटी आरओबी को लेकर संशय है। प्रधानमंत्री से लोकार्पण केवल उन्हीं परियोजनाओं का कराना है जो पूरी तरह से पूर्ण हो चुकी है। अगर पीएमओ से अनुमोदन मिला तो इसका भी पत्थर मौके पर लगाया जाएगा। नहीं तो इसे छोड़ दिया जाएगा। वहीं प्रयागराज जंक्शन-झुंसी मार्ग रेलवे ट्रैक दोहरीकरण, गंगा पर बने नए रेलवे पुल के साथ ही पांच दर्जन सड़कों का लोकार्पण और 26 चौराहों पर हुए सौंदर्यीकरण के काम का और एक फ्लाईओवर का भी लोकार्पण शामिल हुआ।

मोदी-अडाणी भाई-भाई लिखा हुआ बैग लेकर संसद पहुंचीं प्रियंका, भाजपा बोली- फैशन शो नहीं चल रहा यहां

नई दिल्ली (आरएनएस)। संसद की कार्यवाही एक बार फिर से बुधवार तक के लिए स्थगित कर दी गई. सत्ताधारी गठबंधन और विपक्षी दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला जारी है. कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा मंगलवार को जब संसद पहुंची, तो उनके पास एक बैग था. इसके ऊपर लिखा था- मोदी-अडाणी भाई-भाई. राहुल गांधी ने इसे क्यूट बताया.

प्रियंका गांधी ने कहा कि हम संसद में अडाणी का मुद्दा क्यों नहीं उठाएं, हम पहली बार संसद चुनकर आए हैं, हमने तो अभी तक इस सत्र में पीएम मोदी को भाग लेते हुए नहीं देखा. प्रियंका ने कहा कि संसद की कार्यवाही नहीं चलने की वजह से वह डिबेट में हिस्सा नहीं ले पा रही हैं. एक दिन पहले ही प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने संसद परिसर में मोदी-अडाणी का मुखौटा लगवाकर दो लोगों से बातचीत की और उसका वीडियो सोशल मीडिया पर डाला था.

भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के इस कृत्य को प्रजातंत्र का अपमान बताया. पात्रा ने कहा कि क्या प्रतिपक्ष के नेता इस तरह का बर्ताव करते हैं, जिस तरह से राहुल कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का व्यवहार प्रतिपक्ष के नेता की तरह नहीं है, यहां कोई फैशन शो नहीं हो रहा है कि आप अमर्यादित व्यवहार करते रहें. भाजपा प्रवक्ता पात्रा ने कहा कि राहुल गांधी को तो समाजवादी पार्टी भी नेता नहीं मानती है, और न ही वे मल्लिकार्जुन खड़गे को इंडिया ब्लॉक का नेता मानते हैं.

पूर्व विदेश मंत्री एसएम कृष्णा का 92 साल की उम्र में निधन, बीमारियों से थे पीड़ित

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जताया दुख

नई दिल्ली। पूर्व विदेश मंत्री और कर्नाटक में मुख्यमंत्री का पद संभाल चुके सोमनाहल्ली मल्लैया कृष्णा (एसएम कृष्णा) का सोमवार देर रात निधन हो गया। उन्होंने रात 2:30 बजे बेंगलुरु स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली। 92 वर्षीय कृष्णा उम्र से जुड़ी बीमारियों से जूझ रहे थे।

पूर्व विदेश मंत्री एस.एम. कृष्णा के निधन पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और वायनाड से लोकसभा सांसद प्रियंका गांधी ने दुख जताया है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, एस.एम. कृष्णा के निधन के बारे में जानकर दुख हुआ, जिन्होंने अपने लंबे सार्वजनिक जीवन के दौरान विभिन्न पदों पर लोगों की सेवा की राज्य विधानसभा और संसद के सदस्य से लेकर केंद्रीय मंत्री और राज्यपाल तक। कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में, उन्होंने राज्य के विकास के लिए अपनी प्रतिबद्धता के लिए लोगों का स्नेह अर्जित किया। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाए।

सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी : कब तक बांटेंगे फ्री की रेवड़ी, रोजगार के अवसर क्यों पैदा नहीं करती सरकार

नई दिल्ली (आरएनएस)। सुप्रीम कोर्ट ने सरकारों की ओर से चलाई जा रही तमाम मुफ्त की योजनाओं पर सख्त टिप्पणी की. शीर्ष कोर्ट ने पूछा कि फ्री की रेवड़ी कत तक बांटी जाती रहेंगी. इसके साथ ही एससी ने कहा कि सरकार रोजगार पैदा करने पर भी ध्यान देना चाहिए. ये बातें सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहीं. कोर्ट ने कहा कि कोरोना महामारी के बाद से मुफ्त राशन लेने वाले प्रवासी मजदूरों के लिए रोजगार के अवसर बनाने की जरूरत है.

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस मनमोहन की बेंच ने उस वक्त हैरानी जताई जब केंद्र ने शीर्ष कोर्ट को बताया कि 81 करोड़ लोगों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मुफ्त या सब्सिडी के तहत राशन दिया जा रहा है. इसपर एससी की बेंच ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी से कहा कि, इसका मतलब है कि केवल टैक्सपेयर्स ही बाकी हैं.

वहीं एनजीओ की ओर से दायर एक मामले में पेश हुए वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि उन प्रवासी मजदूरों को फ्री राशन मिलना चाहिए, जो ई-श्रमिक पोर्टल पर पंजीकृत हैं. इसके बाद बेंच ने कहा कि, कब तक फ्रीबीज दिए जाएंगे? इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, क्यों न हम इन प्रवासी मजदूरों के लिए रोजगार के अवसर, रोजगार और क्षमता निर्माण पर काम करें?

वही वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने कहा कि, अदालत ने समय-समय पर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिए हैं कि प्रवासी मजदूरों को राशन कार्ड जारी किया जाए, जिससे उन्हें केंद्र द्वारा प्रदान किए गए मुफ्त राशन का लाभ मिल सके. वकील भूषण ने कहा कि कोर्ट के हाल ही में दिए गए आदेश में कहा गया है कि जिनके पास राशन कार्ड नहीं हैं, लेकिन वे ई-श्रमिक पोर्टल पर पंजीकृत हैं, उन्हें केंद्र द्वारा मुफ्त राशन का लाभ दिया जाना चाहिए.

लालू प्रसाद यादव ने इंडिया गठबंधन में कांग्रेस के नेतृत्व को नकारा

लालू बोले- ममता बनर्जी आगे आएं

पटना (आरएनएस)। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने सोमवार को विपक्षी इंडिया गठबंधन का नेतृत्व बदलने को लेकर अपनी इच्छा बताई है। उन्होंने पटना में पत्रकारों को इसका जवाब दिया। पत्रकारों ने उनसे पूछा कि कांग्रेस पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व की मांग पर आपत्ति जता रही है। इस लालू यादव बोले कि कांग्रेस के आपत्ति जताने से कुछ नहीं होता है। हम ममता का समर्थन करते हैं, ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन की कमान सौंपनी चाहिए।

मौजूदा समय में इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस कर रही है, जिसके चेयरमैन कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे हैं। हरियाणा और महाराष्ट्र में करारी हार के बाद इंडिया गठबंधन के नेतृत्व को बदलने की मांग चल रही है। शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भी ममता बनर्जी को नेतृत्व सौंपने की मांग की है। अब लालू यादव की ओर से ऐसा बायन सामने आना, कांग्रेस के लिए मुश्किल खड़ी कर सकता है।बता दें कि बिहार में अगले साल विधानसभा चुनाव हैं। लालू ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भी तंज कसा।

ग्रामीण स्तर पर महिला श्रम शक्ति भागीदारी में 69 प्रतिशत की वृद्धि

महिला श्रम बल भागीदारी दर : आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017-18 से 2022-23 का अवलोकनात्मक विश्लेषण

डॉ. शमिका रवि (ईएसी-पीएम), डॉ. मुदित कपूर (आईएसआई, दिल्ली)

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर (एलएफपीआर) महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण और समग्र आर्थिक समावेशिता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह शोध पत्र 2017-18 से भारतीय राज्यों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एलएफपीआर में उल्लेखनीय पुनरुत्थान को उजागर करते हुए कठोर अर्थमितीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अनुभवजन्य विश्लेषण के लिए तीन व्यापक विषय हैं- (1) महिला एलएफपीआर में हालिया रुझान, (2) एलएफपीआर पर वैवाहिक स्थिति और मातृत्व-पितृत्व का प्रभाव और (3) भारत के सभी क्षेत्रों और राज्यों में उम्र और लिंग के साथ एलएफपीआर में भिन्नता।

इस अध्ययन में इस्तेमाल किया गया डेटा सभी उपलब्ध (2017-18 से 2022-2023) में आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) से लिया गया है। पीएलएफएस 2.5 मिलियन से अधिक व्यक्तियों के लिए विस्तृत रोजगार और जनसांख्यिकीय डेटा प्रदान करता है, जिससे राष्ट्रीय, राज्य और ग्रामीण/शहरी स्तरों पर रुझानों और विविधताओं का विश्लेषण संभव हो पाता है। एलएफपीआर की गणना 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की कुल आबादी के सापेक्ष नियोजित और बेरोजगार व्यक्तियों (काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध) के प्रतिशत के रूप में की जाती है।

परिणाम तीन खंडों में प्रस्तुत किए गए हैं। परिणामों का पहला सेट 2017-18 से 2022-23 तक महिला एलएफपीआर के रुझान को दर्शाता है। राष्ट्रीय स्तर पर, ग्रामीण महिला एलएफपीआर 24.6 प्रतिशत से बढ़कर 41.5 प्रतिशत (9 69 प्रतिशत वृद्धि) हो गई, जबकि शहरी एलएफपीआर मामूली रूप से 20.4 प्रतिशत से बढ़कर 25.4 प्रतिशत (9 25 प्रतिशत वृद्धि) हो गई। महत्वपूर्ण अंतरराज्यीय भिन्नताएं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, झारखंड (9 233 प्रतिशत वृद्धि) और बिहार (9 6× वृद्धि) जैसे राज्यों में महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। पूर्वोत्तर राज्यों ने भी उल्लेखनीय वृद्धि दिखाई (उदाहरण के लिए, नगालैंड- 15.7 प्रतिशत से 71.1 प्रतिशत) की वृद्धि। राष्ट्रीय स्तर पर, शहरी क्षेत्रों में कुल मिलाकर मामूली वृद्धि देखी गई।

परिणामों का दूसरा सेट, आयु, वैवाहिक स्थिति और घरेलू संरचना, विशेष रूप से 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की उपस्थिति के आधार पर महिला एलएफपीआर प्रस्तुत करता है। सामान्य रुझान दर्शाते हैं कि लगभग सभी राज्यों में महिला एलएफपीआर में वृद्धि हुई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक वृद्धि देखी गई है। हमने यह भी पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं ने अविवाहित महिलाओं की तुलना में अधिक भागीदारी वृद्धि दिखाई है। राजस्थान और झारखंड जैसे राज्यों ने विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के बीच महत्वपूर्ण वृद्धि दिखाई। हालांकि, महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और अंतरराज्यीय भिन्नताएं हैं। उत्तरी राज्यों में, पंजाब और हरियाणा में महिला एलएफपीआर कम रही। पूर्वी राज्यों में, ग्रामीण बिहार में देश में सबसे कम एलएफपीआर था, लेकिन हाल के वर्षों में इसमें महत्वपूर्ण सुधार हुआ है – विशेष रूप से ग्रामीण विवाहित महिलाओं के लिए। पूर्वोत्तर राज्यों में, ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसमें नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश सबसे आगे हैं। पूर्वोत्तर के शहरी क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं के बीच मध्यम वृद्धि देखी गई है, जबकि देश के अन्य हिस्सों में शहरी क्षेत्रों में विवाहित महिलाओं के लिए मामूली वृद्धि देखी गई है। पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों में, एलएफपीआर में वृद्धि मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाओं के बीच केंद्रित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में केवल मामूली वृद्धि देखी गई है। आंध्र प्रदेश में बच्चों वाली शहरी महिलाओं की एलएफपीआर में बड़ी गिरावट आई है।

परिणामों का तीसरा सेट लिंग और आयु के आधार पर एलएफपीआर में अंतर प्रस्तुत करता है। इसमें पाया गया कि वैवाहिक स्थिति और बच्चों की उपस्थिति प्रत्येक श्रेणी के लिए कैसे अंतर लाती है। कुल मिलाकर परिणाम दर्शाते हैं कि महिला एलएफपीआर एक घंटी के आकार का वक्र बनाती है, जो 30-40 वर्ष की आयु में चरम पर होती है और उसके बाद तेजी से घट जाती है।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह-2024 के अवसर पर आज दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय बिलासपुर में ऊर्जा संरक्षण पर सेमीनार का आयोजन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 8 दिसंबर 2024 से 14 दिसंबर 2024 तक राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में जोनल मुख्यालय बिलासपुर में आज ऊर्जा संरक्षण पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमिनार में महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, प्रमुख विभागाध्यक्षों और रेलवे व ऊर्जा संरक्षण क्षेत्र के तकनीकी विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।

इस अवसर पर महाप्रबंधक सुश्री नीनु इटियेरा ने सेमिनार में कहा कि राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह 2024 का उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना और स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना है। भारतीय रेलवे द्वारा ऊर्जा दक्षता और पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए इस आयोजन में भाग लिया जाता है एवं ऊर्जा संरक्षण केवल एक जिम्मेदारी नहीं बल्कि एक आवश्यकता है।

ऊर्जा संरक्षण पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की प्रमुख पहलें- 100 प्रतिशत विद्युतीकरण- जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम की और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी लाई। 50 मेगावाट का भूमि आधारित सौर ऊर्जा संयंत्र- दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के चरोदा, भिलाई में स्थापित, जिससे सालाना 20 करोड़ रुपये की बचत हो रही है। रूफ-टॉप सौर ऊर्जा प्रणाली- 5.45 मेगावाट की क्षमता से हर महीने 3.8 लाख यूनिट बिजली उत्पन्न कर 10.1 लाख रुपये की मासिक बचत हो रही है। पुनर्योजी ब्रेकिंग तकनीक- तीन-फेज लोकोमोटिव में 15% ऊर्जा बचत की सुविधा। हेड ऑन जनरेशन (एचओजी) मोड में 22 ट्रेनों का संचालन, जिससे 34.36 लाख लीटर डीजल तेल की बचत।

अन्य प्रयास- एलईडी लाइट, ऊर्जा की कम खपत करने वाले पंखे, और 3-स्टार या उच्च रेटेड उपकरणों का उपयोग। भवनों को भारतीय ऊर्जा ब्यूरो द्वारा शून्य/शून्य+ प्रमाणित किया गया। प्लेटफॉर्म लाइटिंग के 30 प्रतिशत/ 70 प्रतिशत स्विचिंग को स्वचालित किया गया। सेमिनार में ऊर्जा संरक्षण के नवीनतम तकनीकी सुधार जैसे बैटरी स्टोरेज सिस्टम, सोलर ट्यूब्स, और सुपर ECBC अनुपालन पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। साथ ही, प्रदर्शनी में नई तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी जनों ने ऊर्जा संरक्षण पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के प्रयासों की सराहना की।

संक्षिप्त समाचार

भेड़ एवं बकरी की सर्जरी होगी नि:शुल्क, पशु चिकित्सा के लिए 14 लाख की मंजूरी, कलेक्टर डॉ. सिंह ने ली पशु कल्याण समिति की बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने सोमवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष में पशु कल्याण समिति की बैठक ली। इस बैठक में भेड़ एवं बकरी, पशुपालकों का विशेष ध्यान रखते हुए किसी भी प्रकार की सर्जरी को निःशुल्क करने का निर्णय लिया गया। साथ ही पशुओं के प्रबंध संरक्षण एवं संवर्धन के लिए चिकित्सकीय एवं अन्य उपकरण खरीदने 14 लाख की स्वीकृति दी गई। इसी प्रकार बैठक में 50 हजार पशुओं के प्रबंध आकस्मिक प्रबंधन के आरक्षित रखा गया। उल्लेखनीय है कि जिले में 92 पशु चिकित्सा संस्थाएं संचालित है। जहां पशुओं का इलाज किया जाता है। पशुओं के माइनर सर्जरी एवं आर्थोपेडिक सर्जरी में बीपीएल कार्डधारियों के लिए निःशुल्क इलाज किया जाएगा। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ विश्वदीप, डीएफओ लोकनाथ पटेल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर एवं पशु चिकित्सा सेवाएं संयुक्त संचालक शंकर लाल उईके समेत अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बलौदबाजार में मनाया गया विश्व दिव्यांगता दिवस

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय मिनीमता कन्या महाविद्यालय बलौदाबाजार में 2 से 3 दिसम्बर तक विश्व विकलांगता दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम दिव्यांग व्यक्तियों के संघर्षो और उपलब्धियों को सम्मानित करने के साथ-साथ उनके प्रति समाज में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय के छात्राओं के लिए अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और दिव्यांगता से संबंधित विषयों को समझने का एक अनूठा अवसर रहा। कार्यक्रम में क्विज प्रतियोगिता व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें क्विज प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार-5000, द्वितीय-3000, तृतीय-2000 तथा भाषण में प्रथम पुरस्कार-2000, द्वितीय-1000 व तृतीय पुरस्कार-500 रखा गया था। आनंद हास्पिटल द्वारा दो दिवसीय हेल्थ कैम्प का आयोजन किया गया जिसमे सभी छात्राओं का मुफ्त में हेल्थ जांच किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ आनंद बहादुर, विशिष्ट अतिथि शासकीय दाऊ कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय क़ी प्राचार्य डॉ. ए.आर.सी. जैम्स, सहा. प्राध्यापक डॉ. कल्पना उपाध्याय, डॉ. सुनीता त्यागी सहित महाविद्यालय केसमस्त अधिकारी, छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

उचित मूल्य दुकानों के संचालन हेतु आवेदन आमंत्रित

जगदलपुर (विश्व परिवार)। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बस्तर द्वारा छत्तीसगढ़ सार्वजनिक वितरण प्रणाली नियंत्रण आदेश 2016 में निहित प्रावधानों के तहत विकासखण्ड बस्तर के निरस्त शासकीय उचित मूल्य दुकानों खण्डसरा, जामगांव एवं पखनाकोंगेरा के संचालन हेतु आदिम जाति बहुउद्देशीय सहकारी समितियों, ग्राम पंचायतों, तीन महीने पहले पंजीकृत महिला स्व सहायता समूहों, वन सुरक्षा समितियों और अन्य पंजीकृत सहकारी समितियों से 20 दिसम्बर तक आवेदन पत्र आमंत्रित किया गया है। उक्त श्रेणी में आने वाले संस्थाओं के द्वारा उचित मूल्य दुकान संचालित करने के लिए निर्धारित प्रपत्र में भरे गये आवेदन पत्र बैंक खाता, अंतिम जमा राशि की छायाप्रति, पंजीयन पत्र की छायाप्रति, संचालक मंडल का प्रस्ताव सहित कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बस्तर में 20 दिसम्बर 2024 तक कार्यालयीन समयावधि के भीतर जमा कराये जा सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदनों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ चेम्बर प्रतिनिधिमंडल ने कृषि मंत्री रामविचार नेताम से की मुलाकात

ट्रेडर्स व्यापारियों, किराना, दलहन, अनाज पर मण्डी व कृषक कल्याण शुल्क में छूट प्रदान करने एवं पोहा उद्योगों को मंडी टैक्स से पूर्णत: मुक्त करने की मांग की

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, महामंत्री अजय भसीन, कोषाध्यक्ष उत्तमचंद गोलछा, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, विक्रम सिंहदेव, राम मंधान, मनमोहन अग्रवाल ने बताया कि आज दिनांक 10 दिसम्बर 2024 को चेम्बर का प्रतिनिधि मंडल चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष श्री अमर पारवानी के नेतृत्व में माननीय श्री रामविचार नेताम जी, कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन से मुलाकात कर ट्रेडर्स व्यापारियों, किराना, दलहन एवं अनाज पर मण्डी शुल्क एवं कृषक कल्याण शुल्क में छूट प्रदान करने तथा कृषि उपज धान आधारित खाद्य प्रसंस्करण पोहा उद्योगों को राहत देने हेतु अनुरोध करते हुए पत्र सौंपा। इस संबंध में कृषि मंत्री जी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए उचित कदम उठाने की बात कही।

चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष श्री अमर पारवानी ने पत्र के माध्यम से माननीय कृषि मंत्री जी को बताया कि मंडी शुल्क एवं कृषक कल्याण शुल्क में विसंगति होने के कारण मंडियों से प्रतिस्पर्धा पूर्ण रूप से से समाप्त हो गई है जिसका नुकसान कृषक एवं टेड्र्स व्यापारियों को उठाना पड़ रहा है।

अमर पारवानी ने कहा कि किराना, दलहन एवं अनाज पर विगत कई वर्षों से मंडी शुल्क एवं कृषक कल्याण शुल्क में छूट प्रदान की जाती रही है इससे प्रदेश के व्यवसायी पड़ोसी राज्यों से प्रतिस्पर्धा दरों में व्यापार कर पाते हैं। विगत वर्ष भी इसमें छूट प्रदान की गई थी। पारवानी ने आगे बताया कि कृषि उपज धान आधारित, खाद्य प्रसंस्करण पोहा उद्योगों को राहत देने हेतु पोहा एवं मुरमुरा संबंधी लघु उद्योगों हेतु विद्युत दरों में कमी की जाये, पोहा उद्योगों को मंडी टैक्स से पूर्णत: मुक्त किया जावे। लघु उद्योग रोजगार मूलक उद्योग है अत: नगर की सीमा में आने वाले खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को संपत्ति कर से पूर्णतः मुक्त रखा जावे जिससे कि पोहा उद्योगों को राहत मिल सके।

उपरोक्त विषयों पर कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम जी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए उचित कदम उठाने की बात कही।

इस अवसर पर चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष अमर पारवानी, कार्यकारी अध्यक्ष-राम मंधान सहित रविन्द्र तिवारी, जवाहर थौरानी, अमरलाल सचदेव, पवन एवं प्रतापराय पोपटानी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

महापौर नीरज पाल की अध्यक्षता में हुई महापौर की बैठक

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई में महापौर परिषद की बैठक महापौर नीरज पाल की अध्यक्षता में आहूत की गई। जिसमें प्रमुख रूप से 10 बिन्दुओ पर विस्तृत चर्चा की गई, चर्चा के दौरान सभी सदस्यो ने अपने-अपने सुझाव साझा किए। जिसमें नगर पालिक निगम भिलाई के संपत्ति की सुरक्षा हेतु 01 सिनियर गार्ड (सहायक सुरक्षा अधिकारी) एवं 99 सुरक्षा गार्ड कुल 100 की वित्तीय स्वीकृति का प्रस्ताव रखा गया। जिसमें सभी सदस्यो ने अपरी राय देते हुए निविदा के नियम-शर्तो का परीक्षण किये जाने के साथ वर्तमान निविदा को याथवत रखते हुए अगली निविदा होने तक कार्य में वृद्धि की गई है।

इसी तारतम्य में अभिमत/आपत्ति/अनापत्ति प्रदाय करने जांच प्रतिवेदन में भूमि खसरा नम्बर 1558/1 रकबा 82300 हेक्टेयर मे से 7500 वर्ग फूट भूखण्ड आवासीय क्षेत्र है किन्तु खेल मैदान होने के कारण उसमें आपत्ति लगाया गया है। अभिमत (आपत्ति/अनापत्ति) जांच प्रतिवेदन में खसरा नम्बर 208 रकबा 25.52 हेक्टेयर मे से 9100 वर्ग फूट भूखण्ड आवेदित स्थल पंडित दीनदयालपुरम आवासीय योजना के स्वीकृत अभिन्यास में स्थल चिन्हांकित है, उक्त भूमि का पुन: स्थल निरीक्षण करने सहमति दी गई है। रा.प्र.क्र. 202412101600004 अ-19 (1) आबंटन किये जाने के संबंध में खसरा नम्बर 1253 रकबा 17.3360 हेक्टेयर मे से 7500 वर्ग फूट भूखण्ड को समाज हित में आबंटन की मांग किया गया था। जो आवासीय क्षेत्र है, किन्तु खेल मैदान होने के कारण आपत्ति किया गया है।

जोन 03 सीवर लाईन, चेंबर निर्माण कार्य एवं सीवेज संपवेल, सीवेज पम्पींग मुख्य लाईन तथा ट्रांसफार्मर, पम्प इत्यादि निर्माण कार्य 241.07 लाख की लागत राशि से किया जाना है। जिसमें समिति के सदस्यो ने अपनी सहमति देते हुए कार्य कराए जाने पारित किया गया। जोन क्रं. 01 नेहरू नगर क्षेत्रांतर्गत मुख्य राष्ट्रीय मार्ग के किनारे कर्मा चैंक से सुपेला चैंक होते लोहिया पेट्रोल पम्प तक क्षतिग्रस्त निकासी नाला का पुन: निर्माण कार्य लगभग 154.33 लाख की लागत राशि से कराये जाने की सर्व सम्मति से पारित किया गया। इसी प्रकार नगर पालिक निगम कार्यालय में आंन ग्रिड सोलर प्लांट स्थापना कार्य कराये जाने को पारित किया। छ.ग. में सतत योजना के तहत नगरीय ठोस अपशिष्ट बायोमास कम्प्रेष्ड बायोमास प्लांट स्थापना हेतु भूमि हस्तांतरण कार्य को सदस्यो ने सहमति दी। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्रांतर्गत उद्यानों का रखरखाव एवं संचालन/संधारण कार्य कराये जाने की सहमति दी गई। निगम क्षेत्र में स्थित जलागार में डबल वैल्यु सिस्टम करने का कार्य को पुन: निविदा आमंत्रित करने कहा गया।

मानव अधिकार से तात्पर्य उन सभी अधिकारों से है जो व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता एवं प्रतिष्ठा से जुड़े हुए हैं

रायपुर (विश्व परिवार)। मानवाधिकार दिवस हर साल 10 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा मनाया जाता है। यह उस दिन की याद दिलाता है जब 1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा को अपनाया था। सामान्य जीवन यापन के लिए प्रत्येक मनुष्य के अपने परिवार, कार्य, सरकार और समाज पर कुछ अधिकार होते हैं, जो आपसी समझ और नियमों द्वारा निर्धारित होते हैं। भारतीय संविधान द्वारा प्रत्येक मनुष्य को कुछ विशेष अधिकार दिए गए हैं। मानव अधिकार से तात्पर्य उन सभी अधिकारों से है जो व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता एवं प्रतिष्ठा से जुड़े हुए हैं। यह सभी अधिकार भारतीय संविधान के भाग-तीन में मूलभूत अधिकारों के नाम से वर्णित किए गए हैं और न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय है, जिसकी भारतीय संविधान न केवल गारंटी देता है, बल्कि इसका उल्लंघन करने वालों को अदालत सजा भी देती है। वैसे तो भारत में 28 सितंबर, 1993 से मानव अधिकार कानून अमल में लाया गया था और 12 अक्टूबर, 1993 में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का गठन किया गया था, लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 10 दिसंबर 1948 को दिवस मनाने का निर्णय किया। मानवाधिकार दिवस का मकसद लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करना है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार मिलने चाहिए। मानवाधिकार दिवस के ज़रिए, हम उन लोगों और देशों के संघर्षों और प्रयासों को भी याद करते हैं, जो मानवाधिकारों की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। मानवाधिकार दिवस का महत्व इस बात में है कि यह हमें याद दिलाता है कि हर इंसान को स्वतंत्रता, समानता, सम्मान, और अधिकार मिलने चाहिए। यह दिन हमें उन देशों और लोगों की संघर्षों और प्रयासों को याद दिलाता है, जो मानवाधिकारों की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। आज मानवाधिकार दिवस के शुभ अवसर पर आईये प्रण लें कि हम किसी के अधिकारों पर कुठाराघात न करें। **-के.के.पाठक**

प्रधानमंत्री आवास योजना हेतु दावा-आपत्ति की तिथि निर्धारित

भिलाईनगर। प्रधानमंत्री आवास योजना के मोर मकान मोर आस के घटक में नगर पालिक निगम, भिलाई क्षेत्रांतर्गत निर्मित आवासों के आबंटन हेतु किरायेदारी के रुप में निवासरत् परिवारों एवं वरिष्ठ नागरिकजन, दिव्यांगजन हेतु विभिन्न परियोजना स्थल एनार स्टेट खम्हरिया, वार्ड क्रमांक 01 सूर्याविहार के पीछे खम्हरिया, माईल स्टोन स्कूल के पीछे खम्हरिया, स्वप्निल बिर्ल्डस कुरूद, कृष्णा इंजिनियरिंग कॉलेज के पीछे, खम्हरिया, आम्रपाली हाऊसिंग बोर्ड, अविनाश मेट्रोपॉलिश कोहका, ग्रीनवेली खम्हरिया अंतर्गत निर्मित/निर्माणाधीन आवासों के आबंटन हेतु किरायेदारों से आवेदन आमंत्रित किये गये है।

मानव अधिकार दिवस एवं शहीद दिवस मनाया गया

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय मिनीमता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वासु वर्मा की प्रेरण से महाविद्यालय में मानव अधिकार दिवस एवं शहीद वीर नारायण सिंह शहीद दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सुश्री दीपा सोनी अधिवक्ता ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि संविधान को प्रस्तावना में अधिकार एवं कर्तव्यों का उल्लेख है। मानव अधिकारों सें वंचित व्यक्तियों को भी अधिकार दिलाने का प्रयास रहेगा। अपकी लड़ाई जायज है तो आपको निश्चित रूप से न्याय मिलेगा। मानव को अपना जीवन जीने का अधिकार है। मानव अधिकार विस्तृत और व्यापक है। छात्राओं को प्रेरित करने हुए उन्होने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर आप शिक्षा साम्रग्री तथा हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम अपने अधिकार की रक्षा करें।

कार्यक्रम में छात्राओं का संम्बोधित करते हुए महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्य डॉ. कल्पना उपाध्याय ने कहा कि शहीद वीर नारायण सिंह ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुती दी थी। हम अपने कर्तव्यों पर ध्यान दे तो अधिकारों का हनन नहीं होगा एवं हमे दूसरों के अधिकारों का भी हनन नहीं करना चाहिए। मानव अधिकार दिवस पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की 74 छात्राओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. विद्या पाण्डेय सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान ने किया।

साइबर क्राईम पर जागरूकता

शासकीय मिनीमता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार में अन्जोर सामाजिक सेवा संगठन साइबर वालेण्टियर द्वारा छात्राओं वर्तमान में हो रहे साइबर क्राईम के प्रति जागरूक करते हुए सावधानियां बरतने को कहा गया। श्रीमती अर्चना ठाकुन ने कहा कि 1. अपनी गोपनीयता सोशल मिडिया पर नही लानी चाहिए, 2. अपना मोबाईल तथा किसी भी प्रकार की जानकारी किसी भी अपजान व्यक्ति को नही चाहिए, 3. किसी भी प्रकार की किसी को भी शेयन न करें, 4. सावधानिया बरते छोटी सी चुक से आप फस सकते है, 5. चैट करते समय शारीरिक अवस्था के संबंध में किसी को भी कुछ भी शेयन न करें। कार्यक्रम के तीसरें वक्ता श्री रवि नागवानी ने छात्राओं कों बताया कि साईबर धोखा-धड़ी होने पर साईबर हेल्पलाईन नम्बर पर तत्काल सूचित करें।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./16384/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16384
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **30** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331B00031** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JAYANT GAIDHANE** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O LATE. F.G. GAIDHANE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री पूनम चंद तायल 2. श्री अजय कुमार तायल पिता - श्री कृष्ण कुमार** पिता/पति श्री/श्रीमती **3 श्री आशीष तायल पिता - श्री सुरेश कुमार तायल** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./16375/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16375
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- **10** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227C0009A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. URMILA SINGH** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O T.N. SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती मंजू त्रिपाठी** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री महेश त्रिपाठी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कॉलोनी **पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर डंगनिया** रायपुर में निर्मित **ई. डब्ल्यू.एस. भूखण्ड** योजना के अतंर्गत, भूखण्डों में से **भूखण्ड क्रमांक ई. डब्ल्यू, एस.-128 सेक्टर-04, श्रीमती सरोज अग्रवाल पति श्री अर्जुनलाल केडिया** को एकमुश्त ऑफर आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 08.06.2023** को विक्रय विलेख निष्पादित करा लिया गया।

आबंटी द्वारा उक्त भवन को विक्रय करने हेतु **दिनांक 09.12.2024** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर उक्त भूखण्ड **श्रीमती प्रियंका तिवारी पति श्री विकास तिवारी** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो, तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित चस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16393/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 09-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16393
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **69** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR658B00722** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ANJU KASHYAP** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LAL BAHADUR KASHYAP** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PARVATI MANGER** पिता/पति, श्री/श्रीमती **FATTE BAHADUR MANGER** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16395/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 09-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16395
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **69** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR658C0446H** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ABHINADAN MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM NARAYAN MISHRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **AKCHAT TAPAYAKSH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAKESH KUMAR JHA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./16363/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16363
वार्ड का नाम-47-सिविल लाईन वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **47** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR342E00174** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **S.R. DESHMUKH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHIKARI RAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **संतोष देशमुख** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. समलिया राम देशमुख** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पारिवारिक सहमति**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./16366/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16366
वार्ड का नाम-45-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **45** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR739C00213** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **YASHRAJ VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **YUVRAJ VERMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ज्योति बुरड 2 नीरज जैन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति हरख चंद जैन 2 पिता हरख चंद जैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./16365/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2024
रायपुर, दिनांक 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16365
वार्ड का नाम-64-विपिन बिहारी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 64 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR656C00250** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KAPIL DEWAGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RUPSINGH DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **नागेश्वर प्रसाद देवांगन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. कपिल देवांगन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पारिवारिक सहमति**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16387/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16387
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235F00081** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KEWAL CHAND BARDIYA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1 **श्री सौरभ बरड़िया 2 प्रशांत बरडिया 3 भावना विक्रम गादिया 4 कामना खंडेलवाल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **सभी के पिता - श्री केवलचंद बरडिया** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16381/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 10-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16381
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **28** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR235E00009** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **BHUPANDER BANSAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **TRILOKCHAND** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री गुरदीप सिंह टूटेजा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - श्री मोहन सिंह टूटेजा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

प्रधान आरक्षक की पत्नी व पुत्री के हत्या के प्रकरण में थाना सूरजपुर पुलिस ने आरोपियों के विरूद्ध पेश किया अभियोग पत्र

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) पिछले 13 अक्टूबर को थाना सूरजपुर में पदस्थ प्रधान आरक्षक के महगवां स्थित किराये के मकान में जाकर हमला कर पत्नी व नाबालिक पुत्री की हत्या कर अन्यत्र शव फेंकने के मामले में थाना सूरजपुर में दर्ज आपराधिक प्रकरण क्रमांक 575/2024 धारा 137(2), 138, 140(1) बीएनएस की विवेचना की जा रही थी। उक्त प्रकरण की विवेचना में आरोपी 1. कुलदीप साहू पिता अशोक साहू उम्र 25 वर्ष साकिन पुराना बाजारपारा सूरजपुर 2. चन्द्रकांत चौधरी उर्फसी0के0 पिता शिवप्रसाद चौधरी उम्र 28 वर्ष साकिन नेवरा 3. फूल सिंह उर्फ रिन्कू सिंह उम्र 28 वर्ष साकिन पुराना बाजारपारा सूरजपुर 4. आर्यन विश्वकर्मा उर्फ गोल्डी पिता संजय विश्वकर्मा उम्र 20 वर्ष निवासी पुराना बाजारपारा सूरजपुर के द्वारा सुनियोजित तरीके से प्रधान आरक्षक के द्वारा कर्तव्य निर्वहन में की गई कार्यवाही एवं कुलदीप साहू के भाई संदीप साहू के गिरफ्तारी में महत्वपूर्ण भूमिका होने से रंजीशवश एक राय होकर दिनांक 13.10.2024 को प्रधान आरक्षक की पत्नी व पुत्री की हत्या कर शव फेंकना पाया गया जिसके आधार पर आरोपियों की गिरफ्तारी कर माननीय न्यायालय में प्रस्तुत कर न्यायिक रिमाण्ड पर जेल भेजा गया है। उक्त आरोपियों के साथ कुलदीप साहू का साला निलकेश्वर साहू पिता कन्हैयालाल साहू उम्र 26 वर्ष साकिन खडगंवा चौकी बसदेई थाना सूरजपुर तथा रिश्तेदार सूरज साहू पिता स्व.गजराज साहू उम्र 25 साल निवासी करवां थाना जयनगर द्वारा आपराधिक षड़यंत्र में शामिल होने से प्रकरण में इन दोनों को भी गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर जेल भेजा गया था। प्रकरण की विवेचना पूर्ण होने पर आज दिनांक को अभियोग पत्र माननीय न्यायालय में पेश किया गया है।

उक्त प्रकरण के अतिरिक्त दिनांक 13.10.2024 को ही थाना सूरजपुर में पदस्थ आरक्षक घनश्याम सोनवानी पर खौलता तेल फेंक कर जानलेवा हमला करने अपराध क्रमांक 573/2024 धारा 296(बी), 551(3), 221, 132, 118, 121(2), 109(2) बीएनएस एवं एसटीएससी एक्ट के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया है। दिनांक 13.10.2024 को ही पुलिस बल पर वाहन चढ़ाकर कुचलने का प्रयास करने के संबंध में अपराध क्र. 574/24 धारा 221, 132, 109 (1) बी.एन.एस. के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया है तथा घटना के पश्चात् आरोपी कुलदीप साहू के द्वारा भागते समय ग्राम करवां मेन रोड़ में पीछा करने वाले पुलिस पार्टी पर फायरिंग करने के मामले में थाना प्रभारी विश्रामपुर की रिपोर्ट पर थाना जयनगर में अपराध क्र. 218/24 धारा 109(2) बीएनएस, 25, 27 आर्म्स एक्ट का अपराध पंजीबद्ध किया गया है जिसकी विवेचना की जा रही है।

मामले के मुख्य आरोपी कुलदीप साहू हिस्ट्रीशीटर बदमाश है जिसके विरूद्ध थाना सूरजपुर में 20 अपराध पूर्व के पंजीबद्ध है जिनमें 1 छेड़छाड़ का मामला, 1 लापरवाही पूर्वक वाहन चलाकर एक्सीडेंट करना, 1 अपहरण, 9 मारपीट, 1 नकबजनी, 2 चोरी, 1 डकैती, 1 आर्म्स एक्ट, 1 लूट, 1 बलवा तथा 1 विद्युत अधिनियम के मामले पंजीबद्ध है जिनमें मुख्य आरोपी चालान हो चुका है इसके अलावे कई प्रतिबंधात्मक कार्यवाहियां भी हुई है। घटना दिनांक 13.10.2024 के पश्चात् इसके विरूद्ध 4 गंभीर धाराओं में अपराध पंजीबद्ध है। आरोपी कुलदीप साहू का जिला बदर की कार्यवाही भी दिनांक 15.11.2023 को छ.ग. राज्य सुरक्षा अधिनियम के तहत किया गया था। इसके अतिरिक्त सह आरोपी चंद्रकांत चौधरी के विरूद्ध पूर्व में 1 मारपीट और 1 प्रकरण शासकीय कार्य में बाधा उत्पन्न कर गाली-गलौज व मारपीट करने तथा सह आरोपी फुलसिंह उर्फ रिंकू के विरूद्ध 1 छेड़छाड़ का मामला पंजीबद्ध हुआ था जिसमें चालान किया गया था और 1 प्रतिबंधात्मक कार्यवाही भी हुई है।

विभागवार प्राप्त आवेदनों की स्थिति पर कलेक्टर जयवर्धन ने की समीक्षा

सूरजपुर(विश्व परिवार)। आज समय सीमा की बैठक कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में रखी गई थी। जिसमें कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन ने जिले में संचालित सभी योजनाओं की विभागवार जानकारी प्राप्त की और आवश्यक निर्देश दिए। इस बैठक में डीएफओ श्री पंकज कमल, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू, अपर कलेक्टर श्रीमती नयनतारा सिंह तोमर, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती चांदनी कंवर, सर्व एसडीएम, तहसीलदार सहित अन्य संबंधित जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। बैठक में कलेक्टर श्री जयवर्धन ने विभागवार एक-एक आवेदन पर जानकारी प्राप्त कर, निर्धारित समय पर आवेदन के निराकरण पर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने समय-सीमा प्रकरणों की समीक्षा के साथ विभागीय कार्यों की समीक्षा भी की। इस अवसर पर आकांक्षी ब्लॉक प्रतापपुर में विकास कार्यों के प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कार्ययोजना अनुरूप कार्य में तेजी लाने के निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिए। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम, सिकल सेल एनीमिया, जन औषधि केंद्रों, सहित स्वास्थ्य विभाग की अन्य योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। शिक्षा विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने पीएम श्री स्कूल के सम्बन्ध में जानकारी ली और व्यवस्था बेहतर करने के निर्देश दिए। स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था की जानकारी लेते हुए लापरवाह शिक्षकों पर सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्कूलों में जाति, निवास, आय प्रमाणपत्र बनवाने के स्थिति की जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने जिले के सभी छात्रावासों में सुविधाएं बेहतर करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर उन्होंने कृषि एवं संबंधित विभागों के अंतर्गत चल रही योजनाओं के संबंध में जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने जिले में निर्माण कार्य में लगी विभागों पी डब्लू डी, जल संसाधन और पी एच ई अंतर्गत योजनाओं की समीक्षा करते हुए सभी निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं।

इसके अलावा उन्होंने पीएम स्वनिधि, सॉइल हेल्थ कार्ड, राशन कार्ड और ई केवाईसी, जल जीवन मिशन, जल शक्ति अभियान, सुरक्षित मातृत्व अभियान, चिरायु योजना, राशन कार्ड निर्माण की स्थिति, विश्वकर्मा योजना का जायजा लिया। उन्होंने आंगनबाड़ी की स्थिति, बच्चों में कुपोषण की स्थिति और महतारी वंदन योजना की जानकारी ली। आंगनबाड़ी केंद्रों में स्वच्छ पेय जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। शत प्रतिशत हितग्राहियों का आधार कार्ड और आयुष्मान कार्ड बनवाने एवं अद्यतन करवाने के निर्देश दिए।

नौकरी लगाने के नाम पर धोखाधड़ी करने वालों पर पुलिस ने की कार्यवाही

2 आरोपियों को गिरफ्तार कर भेजा गया न्यायिक हिरासत पर

कोरबा(विश्व परिवार)। (1) सुमन सिंह राजपूत पिता चेतन सिंह उम्र 32 वर्ष साकिन बसंतपुर थाना कोतवाली जांजगीर चांपा (छ.ग.) (2) जय सिंह राजपूत पिता चेतन सिंह राजपूत उम्र 30 वर्ष साकिन बसंतपुर थाना कोतवाली जांजगीर चांपा (छ ग)। श्रीमान् पुलिस अधीक्षक महोदय कोरबा श्री सिद्धार्थ तिवारी, अति0 पुलिस अधीक्षक महोदय कोरबा श्री यूबीएस चैहान, नगर पुलिस अधीक्षक महोदय दर्री श्री विमल कुमार पाठक के मार्गदर्शन पर लगातार जुआ, सट्टा, आबकारी एवं नारकोटिक्स एक्ट की कार्यवाही हेतु निर्देशित करने के परिपालन में थाना प्रभारी दीपका प्रेमचंद साहू के नेतृत्व में दीपका पुलिस टीम के द्वारा लगातार कठोर कार्यवाही कि जा रही है। इसी क्रम में बाबू का नौकरी लगाने का झांसा देकर 450000.00 रू चार लाख पचास हज़ार रू वसूल करने वाले दो आरोपियों को बिलासपुर और जांजगीर से पकड़ने में दीपका पुलिस कोरबा को सफलता प्राप्त हुई है। दिनांक 07/12/2024 को प्रार्थी संजय दास द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया गया था कि आरोपीया सुमन सिंह द्वारा अपने भाई जय सिंह के साथ मिलकर प्रार्थी और उसके दोस्त का सरकारी नौकरी लगाने के नाम पर धोखाधड़ी कर 450000.00 रू चार लाख पचास हज़ार रू वसूल लिए है, उक्त रिपोर्ट पर थाना दीपका में अपराध क्रमांक 415/2024 धारा 420,34 भा द वि पंजीबद्ध कर दोनों आरोपियों को जांजगीर चांपा और बिलासपुर से गिरफ़्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

ऑनलाइन प्लेटफार्म से खरीदे गए 18 बटनदार चाकू जब्त

कोरबा(विश्व परिवार)। जिला पुलिस ने एसपी कोरबा सिद्धार्थ तिवारी के नेतृत्व और एएसपी यू.बी.एस. चौहान के पर्यवेक्षण में एक प्रभावी कार्रवाई की है। इस अभियान का संचालन सीएसपी दर्री विमल पाठक के नेतृत्व में किया गया। इस अभियान के तहत, कोरबा जिले के नागरिकों से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे अमेजन और फ्लिपकार्ट से पिछले एक वर्ष में खरीदे गए 18 बटनदार चाकू जब्त किए गए हैं। यह पहल प्रिवेंटिव पुलिसिंग के तहत शुरू की गई है, जिसका उद्देश्य चाकूबाजी की घटनाओं को रोकना, कानून-व्यवस्था बनाए रखना और गंभीर अपराधों जैसे शारीरिक हमले (बॉडी ऑफेंस) को रोकना है। बटनदार चाकू जैसे घातक हथियार अक्सर आपराधिक गतिविधियों में इस्तेमाल किए जाते हैं, जिससे आम जनता की सुरक्षा को खतरा हो सकता है। कोरबा पुलिस ने इस अभियान में जनता का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया। सभी नागरिक जिन्होंने इन प्लेटफॉर्म से बटनदार चाकू खरीदे थे, उन्होंने पुलिस के आह्वान पर स्वेच्छा से उन्हें जमा किया। यह सामुदायिक पुलिसिंग की एक उत्कृष्ट मिसाल है, जहां नागरिकों ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस का साथ दिया। कोरबा पुलिस जनता से अपील करती है कि वे इस प्रकार के अवैध या खतरनाक हथियार खरीदने से बचें और समाज में शांति व सुरक्षा बनाए रखने में योगदान दें। इस अभियान के तहत मिली सफलता भविष्य में भी इस तरह की प्रिवेंटिव पुलिसिंग के लिए प्रेरणा बनेगी।

शराब की कीमत पर पानी, देसी शराब दुकान में चल रहा है गोरखधंधा

मदिरा प्रेमियों ने वीडियो बनाकर किया सोशल मीडिया में वायरल

कोरबा(विश्व परिवार)। ग्राहकों को पानी का खर्च करने की जरूरत नहीं बल्कि शराब की कीमत पर पानी पीने को मिल रहा है। नशा चढ़े या ना चढ़े आप यहां पैसा देते जाइए और पौव्वा पर पौव्वा खरीदते जाइए, सुबह से शाम हो या रात हो जाए मजाल है जो नशा चढ़ जाए। बस,आपकी जेब जरूर ढीली होती जाएगी। कोरबा जिले के कोयलांचल कुसमुंडा क्षेत्र के भैरोताल बलगी मोड़ स्थित देसी शराब दुकान में यह गोरखधंधा यहां के कर्मचारियों द्वारा खेला जा रहा है। कहने को तो शराब की शीशियाँ सील पैक आती हैं लेकिन होलोग्राम का क्या जब नकली शराब का खेल चल रहा है। ढक्कन खोलकर शराब उड़ेल कर पानी मिलाने के बाद उसे वैसा ही पैक करके शराब बेची जा रही है। यह मदिरा प्रेमियों के साथ सरासर न सिर्फ अन्याय है बल्कि उनके साथ छल हो रहा है। उनकी जेब पर डाका डाला जा रहा है, उनके मेहनत की कमाई को लूटा जा रहा है।इस तरह के मामले जिले में पहले भी सामने आते रहे हैं लेकिन कार्यवाही सिर्फ एक-दो मामले में ही देखने व सुनने को मिली है। आबकारी विभाग के अधिकारियों की समय-समय पर औचक निरीक्षण नहीं करने की प्रवृत्ति का यह दुष्परिणाम है कि आम जनता ठगे जा रहे हैं,छले जा रहे हैं और कई देशी-विदेशी शराब दुकान के कर्मचारी अपनी अपना गोरखधंधा चला रहे हैं।इस तरह के मामलों में तो सीधे एफआईआर दर्ज होनी चाहिए क्योंकि प्रमाणित अपराध है और सरकार की छवि भी खराब हो रही है। एक ओर सरकार नशा मुक्ति की बात करती है तो दूसरी तरफ शराब की कीमतों में वृद्धि भी की गई है। लोग महंगी शराब खरीद कर पी रहे हैं लेकिन इस तरह के रवैया से सरकार की छवि खराब होने में कोई कसर बाकी नहीं रह जाती। जिले में अधिकारी बदलते हैं लेकिन कर्मचारी तो वही पुराने होते हैं जिन्हें मिलावट के पूरे खेल की जानकारी है।

नेशनल खेलकूद प्रतियोगिता में डी.ए.वी. विश्रामपुर को रजत पदक

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-दिल्ली के खेलगांव, नोएडा, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स विनोद नगर में 2 दिसंबर से 4 दिसंबर 2024 तक तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद प्रतियोगिता 2024-25 आयोजित की गई जिसमे डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विश्रामपुर के प्राचार्य श्री एच के पाठक जी के कुशल मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ क्रीड़ा शिक्षक पी के वैद्य और खेल शिक्षिका श्रीमती चित्रावती मिश्रा, शिक्षक रामजी सिन्हा, नासिर खान, शिक्षिका अनीता वर्मा व श्रीमती नमिता गार्गी के नेतृत्व में विद्यालय के 65 छात्र-छात्राओं ने कबड्डी, फुटबॉल, शतरंज, जूडो, ताईक्वांडो, स्केटिंग, क्रिकेट की स्पर्धाओं में अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विद्यालय को गौरवान्वित किया।

विद्यालय की फुटबॉल टीम ने पंजाब, आंध्र प्रदेश , बिहार की टीमों को परास्त करती हुई राजस्थान के साथ फाइनल मैच खेली और उप विजेता बनी। विश्रामपुर की टीम को रजत पदक प्रदान किया गया। विश्रामपुर की फुटबॉल टीम में जयसूर्या, जोबी सारथी ,अतुल त्रिपाठी , हर्षित, हर्ष गुप्ता विनीत शर्मा आदि प्रतिभागी सम्मिलित रहे।

17 वर्ष आयु के अंतर्गत बालक वर्ग जूडो में अमन नायक को कांस्य पदक और 14 वर्ष आयु के अंतर्गत बालक वर्ग जूडो में आर्यन नायक को कांस्य पदक प्रदान किया गया। 17 वर्ष आयु के अंतर्गत बालिका वर्ग ताईक्वांडो में न्यासा जायसवाल व रक्षा खत्री को कांस्य पदक एवं 14 वर्ष आयु के अंतर्गत बालिका वर्ग ताईक्वांडो में सौम्या शर्मा को कांस्य पदक प्रदान किया गया।17 वर्ष आयु के अंतर्गत बालक वर्ग ताईक्वांडो में शौर्य प्रताप ने कांस्य पदक प्राप्त किया।

विद्यालय प्राचार्य महोदय श्री एच. के. पाठक जी ने सभी प्रतिभागियों को अपनी हार्दिक बधाई दीं और उन्होंने कहा कि किसी भी प्रतियोगिता में उत्साह पूर्वक भाग लेना सबसे बड़ी बात होती है। खेल में हार-जीत को समान भाव से स्वीकार करना चाहिए और खेल भावना का परिचय देना चाहिए। खेल मनुष्य को अनुशासित बनाकर जीवन पथ पर मजबूत बनाता है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर के खेल कूद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पदक प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष एवं एस ई सी एल विश्रामपुर क्षेत्र के महाप्रबंधक श्री अजय कुमार तिवारी जी ने समस्त प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं की । विद्यालय स्टाफ ने सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। विविध स्पर्धाओं की तैयारी एवं मार्गदर्शन में समस्त विद्यालय परिवार का सराहनीय योगदान रहा।

संक्षिप्त समाचार

नगर के प्रतिष्ठित नागरिक एस के भटनागर नहीं रहे

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-- शिवनंदनपुर विश्रामपुर मुख्य बाजार के प्रतिष्ठित व्यवसाई एवं नागरिक एस के भटनागर का आज दुखद निधन हो गया ।बताया जाता है कि 75 वर्षीय ह्य के भटनागर का अचानक तबीयत खराब हुई जिन्हें तत्काल अंबिकापुर संभागीय मुख्यालय के मिशन चिकित्सालय में भर्ती कराया गया जहां आज उनका दुखद निधन हो गया ।इस खबर से पूरे शहर में दुख का वातावरण है। कल 11 दिसंबर बुधवार को प्रात: 11 बजे रिहंद नदी के मुक्तिधाम में पुत्र राहुल भटनागर मुखाग्नि देंगे । मृदु भाषी एवं मिलनसार एस के भटनागर के निधन से लोग काफी दुखी दिखे तथा उनके परिजनों को सबल प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की ।

नौ दिवसीय अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ 12 दिसंबर से मुख्य अतिथि महाप्रबंधक अजय तिवारी होंगे

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता 12 दिसंबर से 19 दिसंबर तक एकता स्टेडियम विश्रामपुर में आयोजित किया गया है। शुभारंभ के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय महाप्रबंधक अजय तिवारी होंगे। कार्यक्रम के अन्य अतिथियों में महाप्रबंधक संचालन संजय कुमार सिंह, क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक एसकेपी शिंदे एवं क्षेत्रीय कल्याण समिति के सदस्यों एवं श्रमिक नेताओं के उपस्थिति में किया जाएगा। मिनी रत्न कंपनी विश्रामपुर क्षेत्र द्वारा अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन समारोह आगामी 19 दिसंबर को प्रातः 11 से प्रारंभ होगा जिसके मुख्य अतिथि कंपनी की निदेशक कार्मिक बिरांची दास के मुख्य अतिथि में एवं आलोक कुमार महाप्रबंधक सिविल कल्याण एवं अजय तिवारी क्षेत्रीय महाप्रबंधक तथा क्षेत्रीय कल्याण समिति एवं श्रमिक नेताओं की उपस्थिति में होगा।

पिकअप वाहन पलटा, गाड़ी मे दबकर मासूम की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले में रविवार रात एक बड़ा हादसा हो गया। 25 से अधिक लोग एक पिकअप वाहन में सवार होकर पिकनिक मना कर लौट रहे थे। इसी दौरान कटघोरा क्षेत्र के जटगा चौकी के ग्राम घुमानीडांड़ के पास अचानक गाड़ी पलट गई। इस हादसे में गाड़ी मे दबकर मासूम की मौत हो गई और 25 लोग घायल हो गए. घायलों में 7 की हालत गंभीर है। मौके पर पहुंची पुलिस ने राहगिरों की मदद से सभी घायलों को तत्काल कटघोरा स्वास्थ्य केंद्र में भेजा, जहां उनका इलाज जारी है और मर्ग कायम कर मासूम के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर आगे की कार्रवाई मे जुट गई है। जानकारी के अनुसार, ये ग्रामीण कोरबा जिला के बनखेता ग्राम पंचायत के कांसा मार गांव के निवासी थे, जो बुका में पिकनिक मनाने गए थे। पिकनिक के बाद सभी लोग पिकअप वाहन में सवार होकर अपने गांव वापस लौट रहे थे, तभी यह हादसा हो गया। गाड़ी का चालक नियंत्रण खो बैठा और वाहन पलट गई। इस हादसे में एक मासूम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 25 अन्य लोग घायल हो गए। हादसे के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोगों ने घायल ग्रामीणों को बाहर निकाला।

गांजा तस्करी मामले में आरोपी गिरफ्तार

बलौदाबाजारा-भाटापारा(विश्व परिवार)। थाना भाटापारा शहर पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थ गांजा तस्करी मामले में पिछले लगभग डेढ़ साल से फरार एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 12.05.2022 को सूचना मिली कि कुछ लोग भाटापारा शहर से लिमतरा की ओर मोटरसाइकिल के माध्यम से अवैध मादक पदार्थ गांजा की तस्करी करने वाले हैं। सूचना पर थाना भाटापारा शहर पुलिस द्वारा मेनरोड बलभद्र वार्ड के पास नाकाबंदी किया गया। इस दौरान कॉलेज रोड की ओर से आ रही एक तेज रफ्तार मोटरसाइकिल को रोका गया।

संपादकीय

तेजी से बढ़ी महंगाई

महंगाई और सामान्य आमदनी ना बढ़ने से ग्रस्त भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे पहली चोट 50,000 रुपये मासिक से कम आय वाले परिवारों पर पड़ी। अब 50 हजार से एक लाख रुपए आमदनी के बीच वाले परिवार प्रभावित हो रहे हैं। बाजार की एजेंसियां जब मध्य वर्ग के ह्रास की बातें करने लगें, तो समझा जा सकता है कि आर्थिक संकट कितना गहरा हो चुका है। मध्य वर्ग किसी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होता है। यही तबका है, जिसके उपभोग की आकांक्षाएं लगातार बढ़ रही होती हैं। मध्य वर्ग का आकार बढ़ रहा हो, तो अर्थव्यवस्था में मांग, निवेश, उत्पादन और वितरण का चक्र स्वाभाविक रूप से तेज होता जाता है। यह आर्थिक विकास का वास्तविक पैमाना है। मगर भारत में कहानी पलट चुकी है। सबसे पहले इससे छोटी कारों आदि जैसी टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वाली कंपनियां प्रभावित नजर आईं। फिर रोजमर्रा के उपभोग की वस्तुओं की उत्पादक कंपनियों के अधिकारी कहते सुने गए कि भारत में जो मध्य वर्ग होता था, वह सिकुड़ रहा है, जिससे कंपनियों का कारोबार प्रभावित हुआ है। फिर वित्तीय अखबारों में इसकी पड़ताल करते हुए लंबी रिपोर्टें छपने लगीं कि आखिर मध्य वर्ग को हुआ क्या है। इनमें भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों का उल्लेख कर बताया गया कि सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में घरेलू बचत का अनुपात 50 साल के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। कारण अनसिक्योर्ड ऋण की मात्रा का बढ़ना है, जिसे चुकाने की जद्दोजहद में बचत के लिए कुछ बचता ही नहीं है। अब मार्केट एजेंसियां इस पर रिपोर्ट जारी कर रही हैं। ताजा रिपोर्ट मार्सेलस इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स की आई है। उसके मुताबिक पहले रूटीन नौकरियां मध्य वर्ग का आधार थीं, लेकिन ऑटोमेशन एवं नई तकनीक के उपयोग के कारण ये तेजी से खत्म हो रही हैं। मार्सेलस ने दूसरी वजह घरों का बजट बिगड़ना बताया है। स्पष्टत: इसकी वजह तेजी से बढ़ी महंगाई के कारण परिवारों की घटी वास्तविक आय है। एक अन्य रिपोर्ट में जिक्र है कि महंगाई और सामान्य आमदनी ना बढ़ने से ग्रस्त भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे पहली चोट 50,000 रुपये मासिक से कम आय वाले परिवारों पर पड़ी। अब 50 हजार से एक लाख रुपए आमदनी के बीच वाले परिवार प्रभावित हो रहे हैं। यही तबका मुख्य उपभोक्ता वर्ग रहा है। उसके बिगड़े का नतीजा है कि पूरी उपभोक्ता अर्थव्यवस्था दुश्चक्र फंसती नजर आ रही है।

दिल्ली सल्तनत पर बार-बार क्यों करते हैं किसान चढ़ाई

- डॉ. रमेश ठाकुर

दरअसल, अपनी विभिन्न मांगों को लेकर किसान संगठनों ने एक बार फिर दिल्ली पर चढ़ाई करने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि ऐसा करने से उन्हें बलपूर्वक बॉर्डरों पर ही रोका गया है। पर, हालात दिल्ली-एनसीआर के एक बार फिर बिगड़ते दिखाई पड़ने लगे हैं। अन्नदाताओं की समस्याओं का समाधान आखिर कब होगा? क्या उनकी मांगे भविष्य में कभी पूरी हो भी पाएंगी या नहीं? केंद्र में सरकार चाहे कांग्रेस की हो या भाजपा की, हर दौर में यही सब कुछ देखने को मिलता है। कमोबेस, सरकारों का रवैया सदैव एक जैसा ही रहता है। इसलिए एकाएक किसी सरकार को दोषी ठहराना किसी टिप्पणीकार के लिए बेईमानी सा होता है। किसान आंदोलनों से जो समस्याएं उपजती हैं, उसका खामियाजा सिर्फ और सिर्फ आमजन ही भुगतते हैं। समस्याएं किस कदर पनपती हैं इस ओर शायद किसी का भी ध्यान नहीं जाता। मरीज, छात्र, राहगीर, दैनिक कर्मी तो बेहाल होते ही हैं, रोजमर्रा के क्रियाकलाप भी रुक जाते हैं। दो दिसंबर को भी यही हुआ, जब किसान उत्तर प्रदेश के एक छोर से चले, तो सड़कों पर दौड़ने वाले तेज वाहनों के पहिए थम गए। क्या मरीज, क्या नौकरीपेशा, सभी के पैर अपने जगह रूक गए। दरअसल, अपनी विभिन्न मांगों को लेकर किसान संगठनों ने एक बार फिर दिल्ली पर चढ़ाई करने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि ऐसा करने से उन्हें बलपूर्वक बॉर्डरों पर ही रोका गया है। पर, हालात दिल्ली-एनसीआर के एक बार फिर बिगड़ते दिखाई पड़ने लगे हैं। इस दफे भी किसानों के तेवर उग्र दिख रहे हैं। अन्नदाता लंबा आंदोलन करने के मूड़ में दिखाई पड़ते हैं। इतना तय है, अगर उनकी समस्याओं का समाधान समय रहते नहीं हुआ, तो हालात पिछले किसान आंदोलन जैसे बनने में वक्त नहीं लगेगा। किसान केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार को बीते एक महीने से अल्टीमेटम दे रहे थे कि उनकी मांगे मानी जाएं, उनसे बात करे कोई जिम्मेदार व्यक्ति, जिससे दोनों पक्ष बैठकर कोई हल निकाल सकें। लेकिन उनकी बातों को हुकूमती स्तर पर एक बार भी अनसुना और अनदेखा किया गया। दिल्ली पहुंचने के लिए गौतमबुद्ध नगर से करीब 50,000 से अधिक किसान सोमवार सुबह यानी दो तारीख को नोएडा महामाया

फ्लाईओवर के पास एकत्रित हुए, फिर उन्होंने दिल्ली कूच का प्लान किया, हालांकि तत्काल रूप से तो पुलिस ने उनकी योजना को विफल कर दिया है। लेकिन किसान बॉर्डर पर ही डटे हुए हैं, वह किसी भी सूरत में दिल्ली पहुंचना चाहते हैं। उनको लगता है संसद का शीत सत्र चालू है। पूरी हुकूमती मशीनरी इस समय एक साथ है, उनकी बातें आसानी से पहुंच सकती है। पर, ऐसा होता दिख नहीं रहा। केंद्र सरकार इतनी आसानी से सबकुछ मान लेगी, ऐसा भी दिखाई नहीं पड़ता। इसलिए किसान भी काफी उग्र हैं। अपने साथ लंबे आंदोलन को करने के लिए तामझाम लेकर पहुंच हैं। राशन, टैक्टर, मोटरसाइकिल, गैस सिलेंडर, तंबू आदि है उनके पास। किसानों ने दिल्ली मार्च का प्लान अचानक से ही बनाया। पहले की प्री-प्लान नहीं थी। क्योंकि किसान अपनी विभिन्न मांगो को लेकर नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना प्राधिकरण पर पिछले कुछ दिनों से धरनागत थे। उनकी प्रमुख मांगे हैं, उन्हें ज़मीन के बदले 10 पर्सेंट निर्मित प्लॉट और 64 पर्सेंट बढ़ा हुआ जमीन का शेष मुआवज़ा दिया जाए। साथ ही जितने किसान जमीन छिन जाने से भूमिहीन हुए हैं, उनके परिवार के बच्चों को केंद्र सरकार और राज्य सरकार कोई न कोई रोजगार जैसी वैकप्लिक व्यवस्थाएं की जाएं, इसके अलावा एमएसपी गारंटी कानून लागू करें। फसलों की कीमतें डबर हों, खाद, बीज व कीटनाशक दवाईयों के रेट कम किए जाएं जैसी पुरानी मांगे भी उनकी बरकरार हैं। इस वक्त मंड़ियों में धान की खरीद में जो घटतौली हो रही है उसे तुरंत रोका जाए। ये मांगे ऐसी जिसे शायद ही सरकारें मांगे। प्रतीत ऐसा होता है कि ये किसान मूवमेंट भी बडा रूप ले सकता है। अभी तक गनीमत ये समझी जाए, इस मोर्चे में सिर्फ दर्जन भर ही किसान संगठन शामिल हुए हैं। हालांकि बाहर से करीब सौ से ज्यादा किसान संगठनों का समर्थन प्राप्त है। मोर्चे को रोकने को अगर कोई जल्द विकल्प नहीं निकाला गया, तो अन्य किसान संगठन भी कूदने में देर नहीं करेंगे। हांलाकि सोमवार को किसान मोर्चे को देखते हुए नोएडा ट्रैफिक्र पुलिस और दिल्ली पुलिस की ओर से एडवाइजरी की गई जिसमें कालिंदी कुंज बॉर्डर, यमुना एक्सप्रेस-वे और डीएनडी बॉर्डर से बचने की लोगों को सलाह दी गई, क्योंकि इन जगहों पर मोर्चे का असर व्यापक रूप से देखने को मिला। लोग अनचाई परेशानी से जूझते दिखाई पड़े, स्कूली बच्चों भी जाम में फंसे रहे, एमबूलेंस भी नहीं निकल पाई। नौकरीपेशा समय से अपने कार्यालयों में नहीं पहुंच पाए। ये हालात ऐसे ही बने रहेंगे, जब तक ये मूवमेंट चलता रहेगा। किसान मूवमेंट शुरू होने के कुछ घंटों बाद ही राजनीति भी आरंभ हो गई। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने अपना समर्थन दे दिया। कांग्रेस ने कहा दिल्ली बॉर्डर पर बैरिकेडिंग, वाटर कैनन, दंगा नियंत्रण गाड़ियां और अमित शाह की पूरी पुलिस तैनात की गई। ऐसा प्रतीत होता है जैसे की उनको किसी आंतकवादी को रोकना या पकड़ना हो? किसान भूमि अधिग्रहण का उचित मुआवज़ा और फसल के सही दाम की मांग लेकर दिल्ली आकर सोती सरकार को जगाना चाहते हैं इसमें बुरा क्या है? वहीं, आम आदमी पार्टी की ओर से बयान आया जिसमें कहा गया कि राष्ट्र की राजधानी किसी की बपौती तो है नहीं? फिर किसान क्यों नहीं आ सकते? प्रधानमंत्री पर भी उन्होंने हमला किया। दो दिसंबर को भी यही हुआ, जब किसान उत्तर प्रदेश के एक छोर से चले, तो सड़कों पर दौड़ने वाले तेज वाहनों के पहिए थम गए। क्या मरीज, क्या नौकरीपेशा, सभी के पैर अपने जगह रूक गए। दरअसल, अपनी विभिन्न मांगों को लेकर किसान संगठनों ने एक बार फिर दिल्ली पर चढ़ाई करने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि ऐसा करने से उन्हें बलपूर्वक बॉर्डरों पर ही रोका गया है। पर, हालात दिल्ली-एनसीआर के एक बार फिर बिगड़ते दिखाई पड़ने लगे हैं। इस दफे भी किसानों के तेवर उग्र दिख रहे हैं। अन्नदाता लंबा आंदोलन करने के मूड़ में दिखाई पड़ते हैं। इतना तय है, अगर उनकी समस्याओं का समाधान समय रहते नहीं हुआ, तो हालात पिछले किसान आंदोलन जैसे बनने में वक्त नहीं लगेगा। किसान केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार को बीते एक महीने से अल्टीमेटम दे रहे थे कि उनकी मांगे मानी जाएं, उनसे बात करे कोई जिम्मेदार व्यक्ति, जिससे दोनों पक्ष बैठकर कोई हल निकाल सकें। लेकिन उनकी बातों को हुकूमती स्तर पर एक बार भी अनसुना और अनदेखा किया गया। दिल्ली पहुंचने के लिए गौतमबुद्ध नगर से करीब 50,000 से अधिक किसान सोमवार सुबह यानी दो तारीख को नोएडा महामाया फ्लाईओवर के पास एकत्रित हुए, फिर उन्होंने दिल्ली कूच का प्लान किया, हालांकि तत्काल रूप से तो पुलिस ने उनकी योजना को विफल कर दिया है। बोले, किसानों पर बर्बरता के नए आयाम रच रहे हैं प्रधानमंत्री। उनके दिल में अन्नदाताओं के लिए रत्ती भर सम्मान नहीं है। कांग्रेस का मानना है कि किसान अपनी जायज मांगों को लेकर दिल्ली आना चाहते हैं, उन्हें आने देना चाहिए, उनपर वाटर कैनन का प्रयोग करना गलत है। दरअसल, ऐसे मौकों पर विपक्ष का बिना सोचे समझे कूद पड़ना, 'आग में घी डालने' का काम कर जाता है। जबकि, उन्हें केंद्र सरकार पर दबाव बनाकर विकल्प और समाधान की ओर ध्यानाकर्षण करवाना चाहिए। ताकि सरकार आंदोलनकारियों से बात करने पर विवश हो? पर, दुर्भाग्य ऐसा हो नहीं पाता और न ही विपक्ष ऐसा प्रयास करता है।

आलेख

आजादी के दशकों बाद भी देश की सड़कों के हाल बेहाल

रजनीश कपूर

जब भी कभी हम विदेशों की सड़कें और राजमार्गों पर फर्राटे से दौड़तीं गाडियों को देखते हैं तो मन में यही सवाल उठता है कि हमारे देश में ऐसे दृश्य कब दिखेंगे। आजादी के इतने दशकों बाद भी हमारे देश की सड़कों के हाल बेहाल है। राजनैतिक दल सत्ता में आते-जाते रहते हैं पर इन बुनियादी सुविधाओं पर किसी भी दल का ध्यान नहीं जाता, लेकिन बीते कुछ वर्षो में सड़कों व राजमार्गों के बनने में तेजी अवश्य आई है। वो अलग बात है कि चुनावी घोषणाओं के दबाव में और जल्दबाजी में इन सड़कों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। राजनैतिक दल कोई भी हो राजमार्ग बनाने की जल्दी में किसी ने भी राजमार्गों पर होने वाले हादसों को रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए, जबकि विदेशों में राजमार्गों पर होने वाले हादसों के प्रति वहां की सरकारी और नागरिक काफी संवेदनशील हैं। दो वर्ष पहले जब मशहूर उद्योगपति साइरस मिस्त्री की एक सड़क हादसे में मृत्यु हुई थी तो सड़क नियमों को लेकर काफी चर्चा हुई। इस हादसे के पीछे कई कारण बताए गए, जैसे की तेज गति, हादसे की जगह सड़क का कम चौड़ा होना, आदि। परंतु बुनियादी सवाल यह है कि किसी अमीर व्यक्ति द्वारा चलाई जाने वाली महंगी लग्जरी कार हो या किसी मामूली ट्रक या बस ड्राइवर द्वारा चलाए जाने वाला साधारण वाहन, क्या वाहन चलाने वाले और परिवहन नियम लागू करने वाले अपने-अपने काम के प्रति जिम्मेदार हैं? क्या ये कहना गलत नहीं होगा कि हमारे देश में सड़क सुरक्षा और परिवहन के नियम और कानून दोनों ही काफी लचर हैं। यही कारण है कि भारत में सड़क दुर्घटनाएं और देशों की तुलना में काफी ज्यादा होती हैं? यदि कानून की बात करें तो हमारे देश के कानून इतने लचर हैं कि सड़क दुर्घटना में यदि किसी की मृत्यु भी हो जाती है तो वाहन चालक को बड़ी आसानी से जमानत भी मिल जाती है। ज्यादातर ट्रक व बस ड्राइवरों को भी इस बात का पता है कि उन्हें कड़ी सजा नहीं मिलेगी। सड़क नियम और कानून को सख्ती से लागू करने की जिम्मेदारी केवल ट्रैफिक पुलिस की नहीं होनी चाहिए। इनको लागू करने के लिए समय-समय पर जागरूकता अभियान भी चलाए जाने चाहिए। होता यह है कि देश भर में सड़क व यातायात नियमों के लिए केवल साल में एक ही बार ऐसे अभियान चलाए जाते हैं। यदि ऐसे जागरूकता अभियान महीने में एक बार चलाए जाएं तो ड्राइवरों और आम जनता के बीच जानकारी सही से पहुंचेगी। वे जागरूक होंगे और नियम तोडऩे से पहले कई बार सोचेंगे। इसके साथ ही कानून में भी कड़ी सजा के प्रावधान होने चाहिए जिससे कि सभी के बीच एक संदेश जाए कि यदि सड़क और यातायात नियमों को अनदेखा किया या उन्हें तोड़ा तो उसका परिणाम महंगा पड़ेगा। कड़े कानून लागू होने की बात करें तो होता यह है कि कई सड़कों पर और राजमागरे पर कुछ निर्धारित स्थानों पर स्पीड चेक करने वाले कैमरे लगे होते हैं। इनकी जानकारी वहां से नियमित रूप से निकालने वाले ड्राइवरों को पहले से ही होती है। इसलिए वे उस जगह पर अपनी गाड़ी को नियंत्रित गति से चलाते हैं। ऐसे में दुर्घटनाएं टल तो जाती हैं परंतु जैसे ही वो कैमरे की दृष्टि से दूर होते हैं, वैसे ही गाड़ी के एक्सलेरेटर को जोर से दबा देते हैं। मतलब यह हुआ कि केवल चालान से बचने की नीयत से ही वे गाड़ी को निर्धारित गति से चलाते हैं, जबकि यह तथ्य जगज़ाहरि है कि यदि आप अपनी गाड़ी को नियंत्रित गति से चलाते हैं तो न सिर्फ दुर्घटना टलती है बल्कि ईंधन भी कम खर्च होता है। सरकार और ट्रैफिक पुलिस को इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि जो कैमरे तेज रफ्तार से चलने वाली गाडियों का चालान करते हैं, उनसे अधिक काम भी लिया जा सकता है। स्पीड कैमरे की तकनीक की बात करें तो उसमें लगे रेडार से एक सिग्नल जाता है जो केवल तेज रफ्तार से चलने वाली गाड़ी की ही फोटो खींचते हैं। यदि इसी तकनीक में थोड़ा सा सुधार किया जाए तो वही कैमरा कई ट्रैफिक उल्लंघनों की फोटो भी खींच सकता है। ये सब बातें मैं इसलिए कह रहा हूं कि जब आज से कुछ वर्ष पहले मैं लंदन की यात्रा पर था तो वहां मेरे स्थानीय मित्र ने गाड़ी को राजमार्ग पर लाने से पहले चश्मा लगा लिया।

नौकरशाही से जुड़ी अनावश्यक बाधाएं समाप्त

ए.के. खंडेलवाल

भारतीय रेल और पीएम गतिशक्ति-नेशनल मास्टर प्लान (पीएमजीएस-एनएमपी) के बीच साझेदारी भारत के बुनियादी ढांचे के विकास में मांग के अनुरूप परिवर्तनकारी (गेमचेंजर) भूमिका निभा रही है। इस एकीकृत दृष्टिकोण ने बुनियादी ढांचे से जुड़े मंत्रालयों और रेलवे जोन के बीच समन्वय को उल्लेखनीय तरीके से बेहतर बनाया है, जिससे परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान करने में तेजी आई है। इस पहल ने परियोजनाओं के सर्वेक्षण को मंजूरी देने में आम तौर पर लगने वाले 4-5 महीनों के समय को घटा कर सात दिन कर दिया है। इससे पूरे रेलवे नेटवर्क की दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2022-23 के दौरान कुल 458 परियोजनाओं के सर्वेक्षणों को मंजूरी दी गई जबकि पहले यह संख्या लगभग 50 थी। जहां रेलवे ने ऐतिहासिक रूप से अन्य सरकारी एजेंसियों के साथ समन्वय किया है, वहीं पीएमजीएस के माध्यम से उन्नत डिजिटल प्लेटफार्मो एवं वास्तविक समय में निगरानी का लाभ उठाते हुए परिवहन के विभिन्न साधनों के एकीकरण ने देश के बुनियादी ढांचे के इकोसिस्टम में क्रांति ला दी है। पीएमजीएस का सबसे व्यापक प्रभाव विभागीय अवरोधों को तोडऩा है। परंपरागत रूप से सात अलग-अलग विभाग रेलवे के बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। परिणामस्वरूप अनावश्यक देरी और अक्षमताएं पैदा होती हैं। अंतरविभागीय संवाद को बढ़ावा देने और डिजिटल प्लेटफार्मो का लाभ उठाने से परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान करने में तेजी आई है और नौकरशाही से जुड़ी अनावश्यक बाधाएं समाप्त हो गई हैं। पीएमजीएस के कार्यान्वयन से योजना निर्माण में काफी सुधार आया है। गतिशक्ति के आने से पहले जहां प्रत्येक वर्ष 6-7 परियोजनाएं ही स्वीकृत होती थीं, वहीं वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान 73 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। इस एक वित्तीय वर्ष में सर्वाधिक रिकॉर्ड हैं। कुल 5,309 किमी. नई लाइन, दोहरीकरण और गेज परिवर्तन की परियोजनाओं के पूरा होने के साथ परियोजनाओं के अंतिम रूप से कार्यान्वित होने का रिकॉर्ड भी काफी ऊपर पर पहुंच गया। रेल विद्युतीकरण 7,188 रूट किमी. (आरकेएम) के सार्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है और ट्रैक कमीशनिंग की गति 4 किमी. प्रति दिन से बढ़कर 15 किमी. प्रति दिन हो गई है। प्रभावी रूप से पीएमजीएस-एनएमपी कहां, क्या और कब की विस्तृत मैपिंग के माध्यम से बुनियादी ढांचे की भविष्योन्मुखी योजनाएं बना रहा है। इसमें सामाजिक-आर्थिक बुनियादी ढांचे, ट्रंक एवं उपयोगिता नेटवर्क, मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी, पर्यटन स्थल, भूमि राजस्व मानचित्र और वन सीमाओं से जुड़े सटीक एवं व्यापक आंकड़ों का समावेश है। ये जानकारियां परियोजनाओं के योजना निर्माण और कार्यान्वयन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। सभी परियोजनाओं की जांच (एनपीजी) नेटवर्क प्लानिंग ग्रुप द्वारा की जाती है, जिसमें अतिरेक और निर्माण के बाद केबल/पाइप बिछाने के लिए नई बनी सड़कों को तोडऩे जैसी स्थितियों से बचते हुए समन्वित योजना निर्माण हेतु बुनियादी ढांचे से संबंधित सभी मंत्रालय शामिल हैं। उदाहरण के लिए हाउसिंग सोसाईटियां अब निवासियों के आने से पहले सीवेज, बिजली तथा अन्य सुविधाओं से लैस होंगी और कार्रवाई के लिए शिकायतों के आने का इंतजार नहीं किया जाएगा। मांगों के बढऩे से पहले ही विस्तारित हो रहे उपनगरों के पास स्थित गोदामों को समय पर सड़क कनेक्टिविटी मिलेगी और विस्तार के दौर से गुजर रहे बंदरगाहों को पर्याप्त रेलवे निकासी और मल्टीमॉडल लिंक का लाभ मिलेगा। योजना निर्माण की इस कुशल क्षमता को भास्कराचार्य नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस एप्लिकेशन एंड जियो-इंफॉर्मेटिक्स (बीआईएसएजी-एन) द्वारा समर्थित किया गया है, जिसने पीएमजीएस-एनएमपी को विकसित करने में महती भूमिका निभाई है। गतिशक्ति की सफलता का महत्त्वपूर्ण पहलू बुनियादी ढांचे की उन प्रमुख परियोजनाओं को प्राथमिकता देने में निहित है, जिनका कनेक्टिविटी, दक्षता और लॉजिस्टिक्स को बेहतर बनाने पर अधिकतम प्रभाव पड़ेगा। रेलवे अब शुरु आती और अंतिम छोर तक की कनेक्टिविटी के लिए आर्थिक केंद्र, खदानें, बिजली संयंत्र और लॉजिस्टिक्स हब जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान कर सकता है और मांग से पहले माल ढुलाई गलियारे एवं बंदरगाह कनेक्टिविटी परियोजनाओं की योजना बना सकता है। भारत में आर्थिक विकास को गति देने तथा व्यापार करना और अधिक आसान बनाने की क्षमता के आधार पर इस बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दी गई है। कुल 16 रेलवे जोन के सभी 68 मंडलों के बीच बेहतर सहयोग के माध्यम से होने वाला सुधार स्पष्ट दिखाई देता है। गतिशक्ति के आने से पहले प्रत्येक रेलवे जोन व विभाग एक हद तक अलग-थलग रूप से संचालित होते थे। इससे देरी, अक्षमताएं और समन्वय की कमी की समस्याएं पैदा होती थीं। पीएमजीएस-एनएमपी के माध्यम से डिजिटल इंटरफेस की शुरुआत ने क्रॉस-जोन सहयोग का एक एकीकृत मंच प्रदान किया, जिससे समस्याओं का त्वरित समाधान और परियोजनाओं का सुचारु कार्यान्वनका संभव हुआ। हालांकि मैं पीएमजीएस और भारतीय रेलवे, दोनों को सचेत करना चाहूंगा। जहां सचिन और सौरव ने क्रिकेट के मैदान पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, वहीं राजनीतिक क्षेत्र में उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वैसे ही, पीएमजीएस की शक्ति और रेलवे के दृढ़ संकल्प को वैसी राजनीतिक परियोजनाओं से कमजोर नहीं पडऩे दिया जाना चाहिए जिनमें दीर्घकालिक लाभ का अभाव हो क्योंकि भारत जल्द ही अपनी आजादी के सौ वर्ष पूरा करने वाला है।

बुलडोजर एक्शन पर कोर्ट का आदेश मनमानी पर अंकुश

योगेंद्र योगी

बुलडोजर एक्शन में यही बात नजर आती है। दरअसल यह काम देश की अदालतों का है कि सुनवाई के बाद आरोपी को सजा देने या नहीं देने का। बुलडोजर एक्शन में ऐसे न्याय की संभावना पहले ही खत्म हो जाती है, जहां बगैर किसी सुनवाई के फैसला सुना दिया जाता है। सरकारें की गलतफहमी है कि एक बार चुनाव जीतने के बाद उन्हें मनमानी का अधिकार मिल जाता है। इसी भ्रम में सरकारें अपने को अदालत से ऊपर समझने लगती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने बुलडोर एक्शन के मामले में फैसला देकर सरकारों का यह सपना तोड़ दिया है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिल्ली की आप सरकार के मामले में दिया है, किन्तु यह लागू सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों पर होता है। सुप्रीम कोर्ट ने 13 नवंबर को बुलडोजर एक्शन के खिलाफ दायर याचिका पर फैसला सुनाते हुए तीखी टिप्पणी की। साथ ही बुलडोजर की कार्रवाई को लेकर गाइडलाइन तय कर दी। फैसला सुनाते हुए कोर्ट ने दो टूक कहा कि किसी भी मामले में आरोपी होने या दोषी ठहराए जाने पर भी घर तोडऩा सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने जमीयत उलेमा-ए-हिन्द बनाम उत्तरी दिल्ली नगर निगम व अन्य से संबंधित केस में दो टूक कहा है कि इस मामले में मनमाना रवैया बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अधिकारी मनमाने तरीके से काम नहीं कर सकते। बगैर सुनवाई आरोपी को दोषी नहीं करार नहीं दिया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा अपना घर पाने की चाहत हर दिल में होती है। यद्यपि यह फैसला दिल्ली सरकर से संबंधित है पर इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस फैसले के बाद अब योगी सरकार के लिए बुलडोजर एक्शन लेना भी मुश्किल हो जाएगा। कार्यपालिका के पास असीम शक्तियां होती हैं। इसी बल पर हर साल सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को कार्यपालिका विभिन्न कारणों को आधार बनाकर सैकड़ों आदेशों का अनुपालन नहीं करती है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार से शुरु हुआ बुलडोजर एक्शन का यह सिलसिला पूरे देश में फैल गया था। राज्यों की सरकारों ने इसका राजनीतिक इस्तेमाल करने में कसर बाकी नहीं रखी। वोट बैंक राजनीति ऐसे फैसलों में साफ नजर आती है। हालांकि उत्तर प्रदेश में बुलडोजर एक्शन अपराधियों के आवास और व्यवसायिक प्रतिष्ठान गिराने के लिए लिया गया था। बुलडोजर एक्शन में भी अपराधियों में भेदभाव के उदारहण मौजूद हैं। इसका दुरुपयोग भी सांप्रदायिक आधार पर किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसी सख्त कार्रवाई से अपराधियों में कहीं न कहीं खौफ उत्पन्न होता है। उत्तर

प्रदेश में योगी सरकार ने जिस तरह माफिया या गैंगस्टर का सफाया किया, उससे काफी हद तक अपराधों पर लगाम लग सकी है। इस कार्रवाई से शायद ही कोई इत्तफाक रखता हो। सवाल यही आता है कि अपराध रोकने की आड़ में सरकार क्या कानून से ऊपर है। बुलडोजर एक्शन में यही बात नजर आती है। दरअसल यह काम देश की अदालतों का है कि सुनवाई के बाद आरोपी को सजा देने या नहीं देने का। बुलडोजर एक्शन में ऐसे न्याय की संभावना पहले ही खत्म हो जाती है, जहां बगैर किसी सुनवाई के फैसला सुना दिया जाता है। इससे यदि आरोपी गलत ना भी हो तो उसे घर या दुकान तुड़वाने की सजा भुगतनी पड़ती है। जबकि सजा तय करने की जिम्मेदारी अदालतों की है। सरकारों की यह हरकत निश्चित तौर पर अदालतों के मामले में दखलंदाजी रही है। बुलडोजर एक्शन की कार्रवाई सरकारों को बेशक सस्ती लोकप्रियता दिला सकती है, न्याय नहीं। महाराजगंज जिले में सड़क के फोर लेन की चौड़ीकरण के संबंध में एक व्यक्ति के मकान गिराने के लेकर कोर्ट ने काफी तीखी टिप्पणी दी और उत्तर प्रदेश सरकार पर 25 लाख का जुर्माना भी लगाया। हालांकि यह विकास कार्यों के लिए की गई कार्रवाई थी। इसमें सरकार की वह मंशा नहीं थी कि किसी अपराधी का घर गैरकानूनी अवैध कब्जा की बात कहकर गिराई गई हो। फिर भी कोर्ट ने पीड़ित की बात सुनी। इस तरह के अतिक्रमण हटाने के भी कायदे-कानून बने हुए हैं। उनका पालना किए गए बगैर सीधे बुलडोजर दौड़ा देना, अन्याय ही कहा जाएगा। ऐसे मामलों की भी कमी नहीं हैं, जहां आम आदमी की सम्पत्ति को अतिक्रमण के नाम पर ढहा दिया जाता है, वहीं रसूखदारों की तरफ प्रशासन की आंख उठाने की भी हिम्मत नहीं होती। देश का शायद ही ऐसा कोई शहर होगा जहां, प्रभावशाली लोगों के अतिक्रमण तोडऩे में सरकार और प्रशासन ने उदाहरण पेश किए होंगे। सरकार और प्रशासन प्रभावशाली लोगों के सामने कैसे नतमस्तक हो जाते हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण नोएडा के ट्विन टावर का मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने अगस्त 2021 में सुपरटेक के नोएडा एक्सप्रेसवे पर स्थित एमराल्ड कोर्ट प्रोजेक्ट के अपेक्स और सियान टॉवरों को अवैध ठहराया था। दोनों 40 मंजिला टावरों को ढहाने का आदेश दिया गया। कोर्ट ने कंपनी को फ्लैट खरीदारों को ब्याज के साथ पैसे वापस करने का आदेश दिया। जबकि इस मामले में सरकार और नोएडा ऑथरिटी सब कुछ जानते हुए भी हाथ पर हाथ धरे हुए बैठे रहे। नोएडा अथॉरिटी को भी इस ध्वस्तिकरण पर निगरानी करने और रिपोर्ट अदालत को देने का आदेश दिया गया है। इस आदेश के कुछ महीनों बाद बाद ट्विन टावर को ढहा दिया गया। बुलडजोर एक्शन लेने वाली सरकार और प्रशासन को यह पहले से ही पता था कि ये टावर नियमों के विपरीत बनाए गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

ब्राह्मण पारा वार्ड-44 में पानी की समस्या को लेकर सारथी चौक पर धरना प्रदर्शन

रायपुर (विश्व परिवार)। अमृतमिशन के पाइप से विगत डेढ़ साल से वार्ड के बहुत बड़े क्षेत्र की जनता को पानी का एक बूंद भी नहीं मिल पा रहा है। वार्ड वासी बून्द बून्द को तरस रहे हैं। जिसके तहत ब्राह्मण पारा वार्ड पार्षद श्रीमती सरिता आकाश दुबे जी के नेतृत्व में आज दोपहर 2 बजे सारथी चौक पर बृहद धरना प्रदर्शन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में वार्ड की माताएं, बहनें उपस्थित हुई। हम सभी का साथ देने भाजपा पार्षद दल की नेताप्रतिपक्ष सम्मानीय श्रीमती मीनल चौबे जी, सम्मानीय उप नेताप्रतिपक्ष श्री मनोज वर्मा जी, भाजपा पार्षद दल के प्रवक्ता सम्मानीय मृत्युंजय दुबे जी, ब्राह्मण पारा वार्ड के पूर्व पार्षद श्री आकाश दुबे जी, सदर बाजार पार्षद प्रतिनिधि श्री मुकेश कंदोई जी, श्री अमिताभ दुबे जी, ब्राह्मण पारा वार्ड के बूथ अध्यक्ष श्री आकाश पांडे जी, आनंद भोई जी, श्रीमती दुर्गा देवांगन जी एवम भाजपा के देवतुल्य कार्यकर्तागण उपस्थित हुए। नगर निगम उपायुक्त श्री विनोद पांडेजी, उपायुक्त श्रीमती कृष्णा खटीक जी, ज़ोन 4 कमिश्नर अरुण ध्रुव जी के द्वारा धरना स्थल सारथी चौक पर पहुंचकर ज्ञापन लिया। जिसमें आयुक्त द्वारा तत्काल कार्य प्रारंभ करने का आदेश दिया गया। धरना प्रदर्शन में उपस्थित सभी का आभार।

शासन के 1 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में भगवा चौक एवं कुरूद उद्यान में श्रमदान किया गया

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। राज्य शासन के एक वर्ष पूर्ण होने की खुशी में भगवा चौक में लोगों को जोड़कर श्रमदान किया गया, साथ-साथ सफाई अभियान भी चलाया गया। एक दूसरे को प्रेरित करते हुए स्वच्छता का संदेश दिया गया। चौक में सफाई के बाद जोन कमिश्नर येशा लहरें, उद्यान प्रभारी अध्यक्ष नेहा साहू कुरूद उद्यान में जाकर उद्यान की साफ-सफाई कि वहां टहलने वाले योग, व्यायाम, प्राणायाम करने वाले लोगों को जोड़कर श्रमदान किया गया। श्रमदान के बाद सब लोगों ने स्वच्छता को संकल्प दिलाया गया। वहां पर टहलने वाले, योग करने वाले लोगों ने कहा कि जब नगर निगम इतना कर रहा है, तो हम सबका भी कर्तव्य बनता है। कि मिलकर के छोटे-छोटे जगह जहां हम लोग बैठकर योग करते हैं, प्राणायाम करते हैं, उसको हम सब साफ रखें। यह केवल नगर निगम भिलाई का ही काम नहीं है, हम सब उपयोग करते है, तो साफ भी हम करेंगे। निगम हमारी सुविधाओ को ध्यान में रखकर उद्यान बनाये है, जिसमे हमारे साथ-साथ हमारे बच्चे भी खेलने आते है। जब निगम हमारे बारे में इतना सोचते है तो उनके साथ हम भी साफ-सफाई करेगें। यदि कोई गंदगी करते दिखता है तो उसको भी हम रोकेगे। सफाई अभियान के दौरान स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, अभियंता अरविंद शर्मा, श्वेता वर्मा, अर्पित बंजारे, जोन स्वास्थ्य अधिकारी अंकित सक्सेना, अनिल मिश्रा, वीरेंद्र बंजारे, हेमंत माझी, स्वच्छता निरीक्षक अंजनी सिंह, कमलेश द्विवेदी आदि उपस्थित रहे।

मेधावी दिव्यांग छात्र-छात्राओं को मिली प्रोत्साहन राशि

दुर्ग (आरएनएस)। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के मार्गदर्शन में जिले में समाज कल्याण विभाग के द्वारा 'क्षितिज अपार संभावनाएं' योजना संचालित है। इस योजना अंतर्गत माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् मेधावी दिव्यांग छात्र-छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा प्रोत्साहन योजना के तहत प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इस योजना का उद्देश्य माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत दिव्यांग छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। ताकि वे स्वावलंबी बन सकें और समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकें।

कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ का तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आज से

कृषि विश्वविद्यालय में जुटेंगे देशभर के कृषि अर्थशास्त्री

कृषि मंत्री नेताम करेंगे शुभारंभ, वित्त मंत्री चौधरी करेंगे अध्यक्षता

रायपुर (विश्व परिवार)। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ, नई दिल्ली का तीन दिवसीय 32वां वार्षिक सम्मेलन 11 से 13 दिसम्बर, 2024 तक 'उच्च, सतत और समावेशी विकास के लिए कृषि का डिजिटलीकरण' विषय पर आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का शुभारंभ कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रामविचार नेताम करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वित्त, वाणिज्यिक कर, आवास और पर्यावरण, योजना तथा आर्थिक एवं सांख्यिकी मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी करेंगे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल, नाबार्ड छत्तीसगढ़ के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. ज्ञानेन्द्र मणि, कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. पी.के. जोशी, कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ, नई दिल्ली के सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. पी.एस. बिरथल एवं राष्ट्रीय जैव स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा, रायपुर के निदेशक डॉ. पी.के. घोष उपस्थित रहेंगे।

कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान संघ, नई दिल्ली एक पंजीकृत सोयायटी है जो 1987 में अस्तित्व में आई और वर्तमान में भारत और विदेश में इसके 1200 से अधिक आजीवन सदस्य हैं। संघ कृषि अर्थशास्त्र, नीति विश्लेषण और ग्रामीण विकास में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को बेहतर बनाने में योगदान देता है। वर्तमान में इसके अध्यक्ष ख्यातिलब्ध कृषि अर्थशास्त्री डॉ. पी.के. जोशी हैं। कार्यक्रम के आयोजन सचिव प्रो. हुलास पाठक ने बताया कि इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य देश के प्रमुख कृषि अर्थशास्त्रियों, नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और क्षेत्रीय विशेषज्ञों को एक मंच में लाने के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में उभरती चुनौतियों पर विचार-विमर्श करना और टिकाऊ व समावेशी विकास के लिए नवाचारी दृष्टिकोण विकसित करना है।

11 से 13 दिसम्बर, 2024 तक आयोजित इस तीन दिवसीय 32वीं वार्षिक सम्मेलन में कृषि अर्थशास्त्र से जुड़ी जानी-मानी हस्तियों द्वारा 'टिकाऊ खेती के लिए स्मार्ट एग्री-टेक', 'कृषि-विपणन में डिजिटल परिवर्तन', 'शासन और संस्थागत समार्थन' जैसी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी। सम्मेलन में भारत के अग्रणी कृषि अर्थशास्त्री, जिनमें डॉ. पी.के. जोशी, डॉ. प्रताप एस. बिर्थल, डॉ. मृत्युन्जय, डॉ. डी.के. मरोठिया, डॉ. अंजनी कुमार, डॉ. चेंगप्पा, डॉ. आर.एस. देशपाण्डेय, डॉ. सीमा बाठला, डॉ. स्मिता सिरोही, डॉ. सिरिषा सहित देश विदेश के अन्य 350 से अधिक प्रतिष्ठित कृषि अर्थशास्त्री एवं ग्रामीण विशेषज्ञ, शोधकर्ता, वैज्ञानिक एवं छात्र-छात्राएं नौ तकनीकी सत्रों में अपने-अपने विचार रखेंगे। यह वार्षिक सम्मेलन कृषि क्षेत्र में हो रहे शोध और नीतिगत विकास को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह आयोजन क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर कृषि और ग्रामीण विकास में नई संभावनाओं को उकेरने में व नीति निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्यमंत्री साय आज रायपुर में नवनिर्मित को-वर्किंग स्पेस आरंभ, इनोवेशन सेंटर इनोवेट एवं बॉक्स स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स का करेंगे लोकार्पण

युवाओं को देंगे जॉब ऑफर लेटर, नव उद्यमी महिलाओं का करेंगे सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जिला प्रशासन एवं नगर पालिक निगम द्वारा निर्मित को-वर्किंग स्पेस आरंभ, इनोवेशन सेंटर, इनोवेट एवं बॉक्स स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स का लोकार्पण 11 दिसंबर को करेंगे। साथ ही युवाओं को जॉब ऑफर लेटर प्रदान करेंगे। नव उद्यमी महिलाओं को सम्मानित करेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता उपमुख्यमंत्री एवं नगरी प्रशासन एवं विकास मंत्री अरूण साव करेंगे। साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रभारी मंत्री एवं वन एवं जलवायु मंत्री केदार कश्यप, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, विधायक गुरू खुशवंत साहेब, विधायक सुनील सोनी, विधायक मोतीलाल साहू, विधायक पुरंदर मिश्रा, विधायक अनुज शर्मा, विधायक मोतीलाल साहू, विधायक इंद्रकुमार साहू, महापौर एजाज ढेबर, जिला पंचायत अध्यक्ष डोमेश्वरी वर्मा, नगर पालिक निगम नेता प्रतिपक्ष श्रीमती मीनल छगन चौबे, नगर पालिक निगम अध्यक्ष प्रमोद दुबे, नगर पालिक निगम लोककर्म विभाग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा, नगर पालिक निगम खेलकूद एवं युवा कल्याण विभाग के अध्यक्ष जितेंद्र अग्रवाल के तौर पर मौजूद रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि राजधानी रायपुर में को-वर्किंग स्पेस आरंभ का जयस्तंभ चौक स्थित मल्टीलेवल पार्किंग एवं इनोवेशन सेंटर, इनोवेट का भाठागांव अंतर राज्यीय बस टर्मिनल में निर्माण किया गया है। पंडरी, अटल एक्सप्रेस-वे फ्लाईओव्हर के नीचे बॉक्स स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स बनाया गया है।

निलंबित आईएएस रानू साहू और माया वारियर की रिमांड बढ़ी

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ के चर्चित डीएमएफ घोटाला मामले में निलंबित आईएएस रानू साहू और माया वारियर की मुश्किलें बढ़ गई है। आज मंगलवार को दोनों को ईडी की विशेष कोर्ट में पेश किया गया। जहां कोर्ट ने दोनों की न्यिक रिमांड 17 दिसंबर तक बढ़ा दी गई है। वहीं निलंबित आईएएस रानू साहू के कथित सहयोगी मनोज द्विवेदी को भी आज मंगलवार को कोर्ट में पेश किया गया। मनोज द्विवेदी पर रानू साहू के साथ मिलकर एनजीओ के माध्यम से डीएमएफ के करोड़ों रुपए गबन का आरोप है।

बता दें कि रानू साहू जून 2021 से जून 2022 तक कोरबा में कलेक्टर थीं। इसके बाद फ रवरी 2023 तक वह रायगढ़ की भी कलेक्टर रहीं। इस दौरान माया वारियर भी कोरबा में पदस्थ थीं। कलेक्टर रानू साहू से करीबी संबंध होने के कारण कोयला घोटाले को लेकर माया वारियर के दफ्तर और घर में ईडी ने छापा मारा था। डीएमएफ की बड़ी राशि आदिवासी विकास विभाग को प्रदान की गई थी, जिसमें घोटाले का आरोप है। इसका प्रमाण मिलने के बाद ईडी ने माया वारियर को भी गिरफ्तार किया गया है।

नगर में आवास योजना के लिए पट्टे की कर रहे मांग

आवास योजना से गरीब जरूरतमंदों को पक्के का मकान मिल रहा

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। शासन आवास योजना के लिए लाखों रु खर्च कर रही है जिसका फायदा गरीबों जरूरत मंदों कों मिल रहा। आवास योजना के लिए पट्टाधारी और रजिस्ट्री जमीन वाले आवेदन कर रहें।

उल्लेखनीय है कि जशपुर नगर की आधी जमीन नजूल पर बसी है जिसमें से किसी के पास पट्टा है तो कोई गैर पट्टाधारि हैं। पट्टे के अभाव में गरीब जरूरत मंदों आवास योजना के अधिकार से वंचित हो रहें। जिला मुख्यालय के वार्डो में कई ऐसे गरीब जरूरत मंद है जिनके पास न पट्टा है और न पक्के मकान बनाने कि हैसियत। आर्थिक अभावों में वह कच्चे के मकान में रह रहें है। लोगों का कहना है जो लम्बें समय से नाजुल जमीन पर निवासरत है उनको आवास योजना प्रदान करना चाहिए। सरकार एक हितग्राहीयों को पक्के का मकान बनाने के लिए शहर में तीन लाख और गांवों में एक लाख तीस हजार के आसपास राशि अलग -अलग किश्तों में प्रदान कर रही हैं। जिसमें समर्थवान आतिरिक्त राशि मिलाकर बिल्डिंग तान रहें है।

पंचायतों में जमीन ढूंढ़कर हितग्राहियों को आवास दिला रहें : गरीब जरूरत मंद पुरी उम्र आर्थिक कारणों से पक्कें का मकान नहीं बना पातें है। इसलिए शासन गरीब जरूरत मंदों को आवास योजना के तहत पक्का मकान प्रदान कर रही है। नगर में ऐसे कई जरूरत मंदों, गरीबों के पास पट्टा और रजिस्ट्री भूमि नही होने के कारण उनका आवास योजना का सपना पुरा नहीं हो पा रहा हैं। जबकि गांवों में पंचायत जरूरत मंदों, गरीबों को जमीन ढूंढ़कर आवास मुहैया करा रही है।

पट्टे के लिए दफ़्तरों के लगा रहें चक्कर : नजूल जमीन पर रहने वाले लोग शासन से पट्टे की मांग कर रहें है। नगरवासियों का कहना है जो 45 साल से रह रहें है उन्होंने पूर्व में पट्टा वितरण के लिए आवेदन किया था इसके बाद भी उन्हें पट्टा नहीं मिल पाया है। जो लम्बे समय से निवासरत है उनको सरकार को पट्टा वितरण करना चाहिए। पट्टे की उम्मीद से जरूरतंद दफ़्तरों के चक्कर लगा रहें है।

योगेश्वर उपाध्याय नगर पालिका सीएमओ जशपुर ने कहा आवास योजना के लिए पट्टा जरूरी है। ओंकार यादव एस .डी.एम जशपुर ने बताया नाजुल जमीन का पट्टा वितरण नहीं किया जा रहा और न कोई ऐसा आदेश आया है।

आम आदमी के सिर पर टैक्स का पहाड़ क्यों- सुखनंदन साहू (जीएसटी सलाहकार)

रायपुर (विश्व परिवार)। जीएसटी सलाहकार श्री सुखनंदन साहू ने बताया किस तरह टैक्स का भार आम जनता पर पड़ रहा है , उदाहरण के रूप में जब आप गाड़ी खरीदने जाते है तो उस गाड़ी की वास्तविक कीमत पर 28 प्रतिशत जीएसटी देना होता है जिसमें 14 प्रतिशत केन्द्र सरकार और 14 प्रतिशत राज्य सरकार को मिलता है और अगर आप स्कूटी या बाइक खरीदते है तो उस पर भी आपको 28 प्रतिशत जीएसटी देना होता है। 28 प्रतिशत जीएसटी लगने के बाद गाड़ियो मे 17 प्रतिशत रोड सेस अलग से लिया जाता है जिसे आप रोड टैक्स भी कह सकते है और 1 प्रतिशत टैक्स टीसीएस के रूप में देना होता है जिसे हम टैक्स कलेक्टेट एट सोर्स भी कहते है, गाड़ी खरीदते वक्त कार इनसोरेन्स लेना पड़ता है जिस पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगता है। और जब अपनी गाड़ी का पॉल्यूसन सर्टिफिकेट लेने जाते है तब भी उस पर भी 18 प्रतिशत जीएसटी देना होता है और सूची लम्बी होती जाती है। इन सब के बाद जब आप अपनी गाड़ियो में पेट्रोल या डीजल डलवाते है तो ज्यादातर राज्यो मे 30 से 50 प्रतिशत तक एक्साइज ड्यूटी और वैट लगता है और ये वैट आपकी राज्य सरकार वसूलती है। और इसके बाद आपको हर बार कार की सर्विस कराने पर 18 प्रतिशत जीएसटी अलग से देना होता है और किसी हाइवे पर टोल टैक्स देने के बाद खराब सड़क और गढढो के कारण गाड़ी खराब हो जाये तो उसको ठीक करने का टैक्स। अगर इन सड़को की वजह से आपकी कार का टायर खराब हो जाये तो नया टायर खरीदने पर 28 प्रतिशत टैक्स देना होता है। और दुर्भाग्यवश इन सड़को पर किसी का एक्सीडेंट हो जाये तो उसे अपने इलाज के लिये दवाइयो पर 5 से 12 प्रतिशत तक टैक्स देना होता है। और इतना टैक्स देने के बाद भी आपको जो चलने के लिए सड़के होगी वो अच्छी होगी और उनमें गढढे नही होंगे इसकी कोई गारंटी नहीं।

संत ज्ञानेश्वर स्कूल के सह प्रभारी नवीन देशमुख, प्रभारी परितोष डोनगांवकर दिव्यांग बालिका विकास गृह की बच्चियों के साथ

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए दिव्यांग बच्ची को लैपटॉप

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर महाराष्ट्र मंडल की दिव्यांग बच्चियों से किया गया वादा पूरा

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल के दिव्यांग बालिका विकास गृह की नेहा सिन्हा व अन्य बलिकाओं, जो छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग, छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मंडल व शिक्षक पात्रता परीक्षा की तैयारी कर रहीं हैं, को संत ज्ञानेश्वर स्कूल के प्रभारी परितोष डोंनगांवकर व सह प्रभारी नवीन देशमुख ने लैपटॉप प्रदान किया। दोनों ने ही दिव्यांग बच्चियों को भविष्य में हर तरह की सहायता के लिए आश्वस्त किया।

दिव्यांग बालिका विकास गृह के प्रभारी प्रसन्न विजय निमोणकर ने परितोष डोनगांवकर और नवीन देशमुख की ओर से दिव्यांग बच्चियों के लिए किए गए समर्पण को लेकर आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा की अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर नेहा देवांगन को आश्वस्त किया गया था कि जल्दी ही उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए लैपटॉप की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उसी के अनुरूप आज उन्हें लैपटॉप दिया गया। अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर ही दिव्यांग बालिका विकास गृह की कमलेश्वरी साहू को भी कामकाजी महिला वसती गृह (सखी निवास) में मैनेजर के पद पर नियुक्ति दी गई थी। कमलेश्वरी ने नौकरी में अपनी जॉइनिंग दे दी है और वे पारिवारिक कार्यों को संपन्न कर 15 दिसंबर को अपनी ड्यूटी शुरू करेंगी।

शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखरजी टोंकों पर बंदरों के भयंकर आतंक से भयवीत जैन समाज व जैन यात्री

झारखंड प्रशासन से की सुरक्षा की मांग

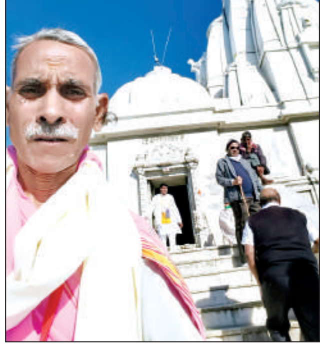

जयपुर (विश्व परिवार)। जैन धर्म के सर्वोच्च शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर जी की तीर्थ वन्दना 28 नवंबर से 6 दिसंबर तक की थी। शाश्वत तीर्थ पर तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली पर स्थित टोकों के दर्शन, वंदना, पूजा, आरती करते समय काफी कठिनाई व भय का सामना करना पडा, वहां पाया गया कि प्रत्येक टोंक पर बंदरों का भयंकर आतंक होने से तीर्थ यात्री जो दूर दूर से आते हैं, उत्साह से आते हैं, पहाड़ की ? कठिन चढ़ाई करके आते हैं वहां वंदना करने में प्रत्येक टोंक पर बंदरों का आतंक होने के कारण, परेशानी का सामना करना पड़ता है तथा यात्री बंदरों के भय से भयवीत थे, दर्शन, पूजा, पाठ, आरती करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

इस प्रकार बंदरों के आतंक को समाप्त करने के लिए जैन पत्रकार महासंघ तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मधुबन में स्थित समस्त मंदिरों के पदाधिकारी, कोठियों के पदाधिकारियों एवं विभिन्न संस्थाओं से अनुरोध करता है कि बंदरों का आतंक को शीघ्र अति शीघ्र रोकने की व्यवस्था की जाए ताकि शाश्वत तीर्थ पर दूर-दूर से आने वाले यात्री अपनी वंदना भक्ति भाव से, बिना भय के कर सकें। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने इस संबंध में झारखंड प्रांत के मुख्यमंत्री एवं झारखंड प्रशासन को भी निवेदन किया है कि जैन धर्म के हृदय स्थल शाश्वत क्षेत्र पर बंदरों के आतंक को तुरंत समाप्त किया जाए, तीर्थ यात्रियों को पहाड़ पर संरक्षण प्रदान किया जाय। **-उदयभान जैन**

35वीं मंडलीय रैली का मंडलायुक्त ने किया शुभारंभ, झांसी मंडल के परिषदीय विद्यालयों के नौनिहालों ने किया प्रतिभाग

खेल से व्यक्तित्व एवं बुद्धि का होता विकास : विमल कुमार दुबे

ललितपुर (विश्व परिवार)। 35वीं मंडलीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन जनपद के तालबेहट स्थित मर्दन सिंह इंटर कॉलेज में मुख्य अतिथि मंडलायुक्त झांसी विमल कुमार दुबे के मुख्य आतिथ्य में आयोजित की गई। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि बेसिक अरूण कुमार शुक्ल, उपजिलाधिकारी तालबेहट भूपेंद्र यादव, नगर पंचायत अध्यक्ष पुनीत सिंह परिहार एवं जिला पंचायत सदस्य मानसिंह यादव रहे।मंडलीय रैली का संयोजन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रणवीर सिंह ने किया। रैली के प्रभारी बीईओ तालबेहट समर सिंह जबकि सह प्रभारी एआरपी दिलीप राजपूत, जनार्दन पाल रहे। बीईओ महरौनी राजकुमार पुरोहित, बीईओ मडावरा नरेश कुमार रावत, बीईओ बिरधा गौरव शुक्ला, बीईओ बार शैलजा व्यास ने कार्यक्रम की रूपरेखा बनायी। रैली में खेल प्रतियोगिताएं जिला व्यायाम शिक्षक ललितपुर धर्मेंद्र जैन, व्यायाम शिक्षक जालौन अविनाश दीक्षित, ममता स्वर्णकार, झांसी के निर्देशन में आयोजित की गई। कार्यक्रम के पूर्व स्काउट गाइड एवं कलर ड्रम पार्टी के बच्चों ने दिव्यघोष से स्वागत किया और मंचस्थल तक लाये। कार्यक्रम के शुभारंभ में मुख्य अतिथि मंडलायुक्त एवं अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र का अनावरण किया। तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। कंपोजिट विद्यालय वर्मा विहार के बच्चों ने स्वागत गीत एवं प्राथमिक विद्यालय टीला की छात्राओं ने सरस्वती बंदना प्रस्तुत की। मंडलीय खेलकूद प्रतियोगिताओं का शुभारंभ मंडलायुक्त ने गतवर्ष की चैंपियन जनपद ललितपुर के ब्लॉक बिरधा के प्राथमिक विद्यालय बंट की छात्रा अंजली से कराया। चैंपियन छात्रा मशाल लेकर खेल प्रतिस्पर्धा की शुरूआत की। तत्पश्चात मंडल के झांसी, जालौन, ललितपुर के बच्चों ने मार्च पास्ट निकालकर मुख्य अतिथि को सलामी दी। इसके उपरांत मुख्य अतिथि ने बच्चों को खेल शपथ दिलाई। इस दौरान मुख्य अतिथि मंडलायुक्त झांसी विमल कुमार दुबे ने कहा कि खेल से व्यक्तित्व, बुद्धि, बल का विकास होता है। खेल से ही नेतृत्व क्षमता, सहयोग, समन्वयक की भावना विकसित होती है।उन्होंने मंडलीय रैली में आये हुए बच्चों से कहा कि खेल को खेल भावनाओं से खेलें। खेल से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। इस दौरान उन्होंने गतवर्ष की मंडलीय रैली की चैंपियन छात्रा एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय मऊ, तालबेहट की दिव्यांग छात्रा ज्योति सहरिया को साईकिल पुरस्कार स्वरूप प्रदान की।उन्होंने टीएलएम का अनुश्रवण किया। तत्पश्चात जालौन के बच्चों ने योगा का प्रदर्शन किया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय मडावरा की छात्राओं ने बालिका शिक्षा पर आधारित गीत प्रस्तुत किया। राई नृत्य में राजापुर गुरसराय, झांसी के बच्चों ने बुंदेलखंड की मिट्टी को समर्पित गीत ऐसी माटी न खंड-खंड में जनम दइयों विधाता बुंदेलखंड में मनभावन गीत प्रस्तुत किया। इस दौरान खेल प्रतिस्पर्धाओं में प्राथमिक स्तर बालक वर्ग पचास मीटर दौड में विकास कम्पोजिट दुरखुरु झांसी प्रथम, अजय कंपोजिट कुंवरपुरा जालौन द्वितीय, शिवाजी कंपोजिट छपरट ललितपुर तृतीय स्थान पर रहे। सौ मीटर दौड में विकास कम्पोजिट दुरखुरु झांसी प्रथम, शिवाजी कंपोजिट छपरट, ललितपुर द्वितीय, योगेंद्र प्राथमिक विद्यालय धुरवारा तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर स्तर बालक वर्ग सौ मीटर दौड में शिवम चौधरी कंपोजिट हैवतपुरा, झांसी सुमित पीएमश्री जीरोंन, ललितपुर द्वितीय, धर्मेंद्र कुमार उच्च प्राथमिक विद्यालय वेलमाकलां झांसी तृतीय, चार सौ मीटर दौड में दीपक कंपोजिट विद्यालय मडावरा रोड महरौनी प्रथम, सुमित कंपोजिट विद्यालय जीरोंन ललितपुर द्वितीय, विनय उच्च प्राथमिक विद्यालय कोटरा तृतीय स्थान पर रहे। प्राथमिक बालिका वर्ग पचास मीटर दौड में प्राथमिक विद्यालय बंट, ललितपुर की अंजली प्रथम, बबीता प्राथमिक विद्यालय कुआगांव, बार द्वितीय, नेहा कंपोजिट प्राथमिक विद्यालय टिकरी, जालौन तृतीय स्थान पर रहीं। जूनियर बालिका वर्ग-सौ मीटर दौड में अंजली उच्च प्राथमिक विद्यालय, वीर, बार प्रथम, नव्या उच्च प्राथमिक विद्यालय गुरसराय, झांसी द्वितीय, भारती उच्च प्राथमिक विद्यालय कुरौरा, महरौनी, ललितपुर तृतीय स्थान पर रहीं।चार मीटर दौड में उच्च प्राथमिक विद्यालय उदयपुरा, बार की राशि प्रथम, उच्च प्राथमिक विद्यालय कडेसरावांसी, तालबेहट की कामिनी द्वितीय, उच्च प्राथमिक विद्यालय भतकपुरा, जालौन की महिमा राजा तृतीय स्थान पर रहीं। रैली में विशेष सहयोग देवेश शर्मा, विजय मिश्रा, महेंद्र विलगईयां, आशुतोष विलगईयां, अमित चतुर्वेदी, श्याम प्रकाश चतुर्वेदी, संतोष गुप्ता, धर्मेंद्र उपाध्याय, विशाल जैन पवा, मनोहर सिंह बुंदेला, आजाद सिंह, सुरेंद्र यादव, राकेश द्विवेदी, उमाशंकर शर्मा, मोहन लाल सुमन, अखिलेश गोस्वामी अमरेश राय, कुलदीप चौरसिया के अलावा रैली को आयोजित कराने वाले शिक्षकों व अनुदेशकों का विशेष सहयोग रहा। इस दौरान उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक के मांडलिक मंत्री एवं जिलाध्यक्ष विनोद निरंजन, प्रांतीय संगठन मंत्री एवं जिलामंत्री शकुंतला कुशवाहा, कोषाध्यक्ष अनिल त्रिपाठी, अरूण निरंजन, सत्येंद्र जैन, मनीष खरे, प्रफुल्ल जैन, राममिलन, सर्वोदय झां, ब्रजेश चौरसिया, जितेंद्र जैन, पुष्पेंद्र जैन, संतोष वर्मा, मुकेश नरवरिया, दयाशंकर, शक्ति सिंह, राजीव गुप्ता, अंतिम जैन, अमित साहू, संतोष कुशवाहा, राजेश निरंजन के अलावा सैकडों की संख्या में शिक्षक, शिक्षकाऐं एवं मंडल रैली में प्रतिभाग करने वाले लगभग पांच सौ बच्चे मौजूद रहे। संचालन डॉ. अनिरुद्ध रावत व दीपारानी एवं सुजाता शर्मा ने किया। अंत में आभार श्री रणवीर सिंह बी एस ए ललितपुर ने व्यक्त किया।

संक्षिप्त समाचार

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाईक सवार की मौत

बलरामपुर(विश्व परिवार)। डूमरखी के आगे बैरियर के पास अज्ञात वाहन के द्वारा टक्कर मारे जाने से बाईक सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान बलरामपुर नगर के वार्ड क्रमांक 2 मरियम पारा में रहने वाले फ्रांसिस केरकेट्टा के रूप में हुई है। मिली जानकारी के अनुसार नगर के वार्ड क्रमांक 2 मरियमपारा में रहने वाले फ्रांसिस केरकेट्टा फादर के साथ दलधोवा गए थे जहां से वापस आ गए थे। परंतु मोबाइल छूट जाने का वापस मोबाइल लेने अपने बाइक से जा रहे थे इसी दौरान डुमरखी के आगे बेरियर के पास अज्ञात वाहन के द्वारा टक्कर मार दिया, जिससे उनके सिर पर गंभीर छोटे लगी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना स्थानीय लोगों के द्वारा तत्काल हाईवे पेट्रोलिंग के कर्मचारियों को दी गई। सूचना पर तत्काल मौके पर हाईवे पेट्रोलियम की टीम पहुंची। बताया जा रहा था कि मृतक फ्रांसिस ने बाईक चलाने के दौरान हेलमेट पहना हुआ था किंतु टक्कर इतनी जबरदस्त थी की हेलमेट भी फट गया एवं फ्रांसिस के सिर पर गंभीर चोट लगी व उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

तलवार लहरा रहा युवक गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की कोतवाली थाना पुलिस ने मसगरी गार्डन धमतरी में तलवार लहराते हुए लोगों को डरा धमका रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है तथा उसके पास से तलवार जब्त कर आरोपी को खिलाफ धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया है। मिली जानकारी के अनुसार थाना सिटी कोतवाली पेट्रोलिंग पर रवाना हुई थी। इसी दौरान पोस्ट ऑफिस वार्ड मरादेव मंदिर के पास मुखबिर से सुचना मिली कि एक युवक रमसगरी गार्डन में अपने हाथ में एक धारदार तलवार को लहराते हुये आने जाने वाले लोगों को डरा धमका रहा। सुचना पर तत्काल कोतवाली पुलिस टीम मुखबिर के बताये स्थान रमसगरी गार्डन के पास पहुंची और देखा कि एक युवक धारदार हथियार तलवार को अपने हाथ लेकर आम जगह पर लहरा रहा था जिसे देखकर आने जाने वाले लोगो में भय व्याप्त था। जिसके बाद पुलिस की टीम ने घेराबंदी कर आरोपी को पकड़ लिया। पुछताछ में आरोपी ने अपना नाम रवि नायक उर्फ भूरी पिता सुदेश नायक उम्र 21 साल साकिन पोस्ट ऑफिस वार्ड धमतरी का रहने वाला बताया। आरोपी के कृत्य अपराध धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के पर्याप्त साक्ष्य सबुत पाये जाने से गवाहों के समक्ष विधिवत गिरफ्तार कर आरोपी के विरुद्ध थाना कोतवाली में धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर,आरोपी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

तीन दिव्यांगों को मिला श्रवण यंत्र

कांकेर(विश्व परिवार)। जिले के तीन दिव्यांगजनों को आज समाज कल्याण कार्यालय परिसर में श्रवण यंत्र प्रदाय किया गया। समाज कल्याण विभाग के उप संचालक ने बताया कि कांकेर विकाससखण्ड के ग्राम कोकपुर निवासी 65 वर्षीय भागबली साहू और उनके बड़े भाई 67 वर्षीय रामप्रसाद साहू जो दोनों श्रवण बाधित हैं, उन्हें कान की मशीन प्रदान की गई। इसी तरह कांकेर श्रीरामनगर निवासी 74 वर्षीय हजारा बेगम को भी श्रवण यंत्र प्रदाय की गई। सहायक उपकरण पाकर सभी दिव्यांगजन अत्यंत अभिभूत हुए और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किए।

युवक ने फांसी लगाकर दी जान, पत्नी और ससुराल पक्ष पर लगाया आरोप

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले के पोटियाडीह गांव में शनिवार को एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली । मृतक युवक, लिनेश साहू 30 वर्ष ने आत्महत्या से पहले अपने व्हाट्सएप स्टेटस पर एक संदेश पोस्ट किया, जिसमें उसने अपनी पत्नी और ससुराल पक्ष पर धर्मांतरण के लिए बार-बार दबाव डालने का आरोप लगाया था। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने मृतक की पत्नी और सास-ससुर समेत 4 लोगों को गिरफ्तार किया है और आगे की कार्रवाई कर रही है। जानकारी के अनुसार, मृतक के परिवार ने बताया कि लिनेश का विवाह सितंबर 2023 में हुआ था । शादी के कुछ महीनों बाद से ही उसकी पत्नी करुणा साहू, सास गौरी साहू, ससुर राजकुमार साहू, डेढ़सास किरण साहू, और साली कनिष्का साहू उस पर और उसके परिवार पर हिंदू धर्म छोड़कर ईसाई धर्म अपनाने का दबाव बना रहे थे। मृतक ने इन परेशानियों से तंग आकर यह कदम उठाया। घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में जुटी। जांच के बाद अर्जुनी पुलिस ने मृतक की पत्नी करुणा साहू, सास गौरी साहू, ससुर राजकुमार साहू, और डेढ़सास किरण साहू को गिरफ्तार कर लिया है।

सफलता की कहानी : सफल उद्यमी के रूप में कविता को मिली नई पहचान

प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन योजना ने दी नई राह

कोंडागांव(विश्व परिवार)। केंद्र व राज्य सरकार महिलाओं के कल्याण और उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही हैं। शासन के योजनाओं से आज महिला सशक्तिकरण की परिकल्पना साकार हो रही है। महिलाएं विभिन्न शासकीय योजनाओं का लाभ उठाकर न केवल अपने पैरों में खड़े हो रही हैं, बल्कि अपने परिवार के पालन पोषण में भी मदद कर रही हैं। कोंडागांव की कविता खान ऐसी ही महिला है, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से शासन की योजना का लाभ उठाकर आज एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनाई है। उनकी यह कामयाबी न केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता की कहानी है, बल्कि जिले की अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। कविता स्वयं का व्यवसाय शुरू कर आत्मनिर्भर बनना चाहती थी, लेकिन उनके लिए यह राह आसान नहीं था। घर से बाहर निकलकर खुद का व्यवसाय शुरू करना एक बड़ी चुनौती थी। प्रारंभ में उन्होंने घर से ही अपना बेकरी का कार्य करती थी। उनका सपना एक बेकरी की दुकान खोलना था पर आर्थिक समस्या ने उनकी राह और भी मुश्किल बना दी थी। प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन योजना के तहत मिली आर्थिक सहायता कविता के लिए उम्मीद की नई किरण बनकर आई। अपनी मां के प्रेरणा से उन्होंने अपनी जमा पूंजी और ऋण की राशि को मिलाकर कोण्डागांव में ड्रीम कैक्स एण्ड बैक्स के नाम से बेकरी की दुकान शुरू की। शुरुआत में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन पति और परिवार के सहयोग ने उन्हें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद की। कविता ने बताया कि शुरुआत में घर और व्यवसाय दोनों को संभालना मुश्किल था। लेकिन अगर आत्मनिर्भर बनना है, तो मुश्किलों का सामना करना ही पड़ता है। इसके बाद उन्होंने बैंक से साढ़े पांच लाख रुपये का लोन लिया, जिसमें तीन लाख रुपये टर्म लोन और ढाई लाख रुपये सीसी लोन शामिल था। इस राशि से और अपनी जमा पूंजी से उन्होंने आवश्यक मशीनरी और सामग्री खरीदी। आज उनकी बेकरी की दुकान अच्छी तरह से चल रही है। हर महीने उन्हें लगभग 30 से 40 हजार रुपए की आमदनी होती है। उन्होंने बताया कि दो कर्मचारियों की सहायता से वे व्यवसाय का संचालन कर रही हैं। उनके पति और बच्चों का सहयोग उनकी सफलता का मजबूत आधार बना। कविता ने शासन की योजना की सहायता से उनके सपनों को साकार किया इसके लिए केन्द्र एवं राज्य शासन को धन्यवाद दिया। कविता का मानना है कि दृढ़ निश्चय से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है। उन्होंने यह साबित कर दिया कि महिलाएं अगर अपने सपनों को साकार करने की ठाने तो आत्मनिर्भरता की नई मिसाल प्रस्तुत कर सकती हैं। कविता के इस सफलता के पीछे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसने उनके जैसे कई अन्य लोगों को अपने सपनों को साकार करने का अवसर दिया है।

जनदर्शन में दिव्यांग पिताम्बर को मिली व्हीलचेयर

कोण्डागांव(विश्व परिवार)। साप्ताहिक जनदर्शन में सोमवार को कलेक्टर कुणाल दुदावत ने विभिन्न क्षेत्रों से आए ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को आवेदनों पर आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया। जनदर्शन में आज विभिन्न मांगों एवं समस्याओं को लेकर कुल 10 आवेदन प्राप्त हुए। जनदर्शन में आज ग्राम बनियागांव से आए दिव्यांग पिताम्बर पोयाम को तुरंत व्हील चेयर मिलने पर उन्हें बहुत राहत मिली है। पिताम्बर ने कलेक्टर को बताया कि वे एक आकस्मिक दुर्घटना के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हो गए हैं, जिसके कारण उन्हें दैनिक कार्य करने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने कलेक्टर से व्हील चेयर और दिव्यांग भत्ता दिलाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया। कलेक्टर ने उनकी मांग पर संवेदनशीलता के साथ त्वरित कार्यवाही हेतु समाज कल्याण विभाग की उपसंचालक श्रीमती ललिता लकड़ा को निर्देशित किया। इसके बाद दिव्यांग पिताम्बर को तत्काल जिला कार्यालय में ट्रायसिकल प्रदाय किया गया। दिव्यांग पिताम्बर ने त्वरित सहायता मिलने पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि अब घर से बाहर आने-जाने में आसानी होगी। उन्होंने इसके लिए जिला प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ अविनाश भोई सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

महतारी वंदन योजना से विशेष पिछड़ी जनजाति महिलाएं हो रही लाभान्वित

गरियाबंद(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ सरकार की महतारी वंदना योजना ने वित्तीय सहायता प्रदान करके स्वयं के व्यवसाय चलाने वाली खासतौर पर कमार विशेष पिछडी जनजाति की महिलाओं के वरदान साबित हो रही है। आदिवासी विकासखंड मैनपुर के विशेष पिछडी जनजाति की कई महिला प्रतिमाह मिलने वाली एक हजार की राशि से बांस खरीदकर बांस का बर्तन, झाडू बनाकर अच्छे दामों में बाजार में बेचकर मुनाफा कमा रही है। विकासखंड मैनपुर के ग्राम पंचायत तुहामेटा के आश्रित ग्राम नारीपानी की महिला सुकवती सोरी एवं धनमोतिन सोरी ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से मिलने वाली एक हजार महतारी वंदन योजना की राशि न केवल बचत में मदद करती है बल्कि महिलाओं और उनके परिवारों के लिए एक उज्जवल भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करती है। इस योजना से मिलने वाली मासिक वित्तीय सहायता से घर की जरूरते भी पूरा हो रही है एवं इस राशि से हमारे स्वयं के व्यवसाय को भी सहारा मिल रहा है। महिलाओ ने बताया कि एक हजार की राशि से वे बांस की खरीदते है और उस बांस से सुपा, टोकरी, चटाई, छितोरी, बांस की पेटी, झाडू, सहित कई घरेलू सामान तैयार करते है जिसे मार्केट मे बेचकर मुनाफा कमाते है। महिलाओं को सक्षम आत्मनिर्भर बनाने के लिए महतारी वंदन योजना छत्तीसगढ़ सरकार ने शुरू की है। इससे महिलाओं में एक नया आत्मविश्वास जगा है और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ी है। महतारी वंदन योजना के तहत राज्य में विवाहित महिलाओं को 1,000 रुपए प्रतिमाह वित्तीय सहायता डीबीटी के माध्यम से सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जा रही है।

कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव ने की जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा

सुकमा(विश्व परिवार)। जल जीवन मिशन के तहत लंबित कार्यों की प्रगति को लेकर कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में विभागीय समीक्षा बैठक की। बैठक में कलेक्टर ध्रुव ने लंबित कार्यों को शीघ्र शुरू करने और स्वीकृत परियोजनाओं को समय पर प्रारंभ नहीं करने वाले ठेकेदारों पर कड़ी कार्रवाई करते हुए उन्हें ब्लैकलिस्ट करने के निर्देश दिए। बैठक में विभागीय अधिकारियों ने कार्यों की स्थिति और प्रगति की विस्तृत जानकारी दी। कलेक्टर ने सभी संबंधित विभागों को समन्वय स्थापित कर मिशन के तहत कार्यों को तेजी से पूरा करने की निर्देश दिए। इस दौरान लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी सहित क्रेडा विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे। कलेक्टर श्री ध्रुव ने जल नमूना जांच कार्यों को तय लक्ष्यों के अनुरूप पूरा करने पर जोर दिया। उन्होंने टंकी निर्माण और विद्युत कनेक्शन कार्यों की प्रगति का भी बारीकी से जायजा लिया। इसके अलावा क्रेडा विभाग के तहत पाइपलाइन कार्य पूर्ण होने के बावजूद सोलर पंप स्थापना कार्य को निर्धारित समय सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सोलर पंप और पाइपलाइन दोनों कार्य पूर्ण होने की स्थिति में प्राथमिकता के आधार पर इनसे जुड़े कार्यों को संपन्न करें ताकि जल जीवन मिशन के लक्ष्यों को समय पर हासिल किया जा सके।

राशन के लिए मीलो दूर की पैदल यात्रा से मिली निजात

वनांचल के सुदूर गांवों में शासकीय योजनाओं का हो रहा है समुचित क्रियान्वयन

बीजापुर(विश्व परिवार)। ग्राम पंचायत कोण्डापल्ली के 160 कार्डधारी एवं भट्टीगुडा के कार्डधारियों को उनके मूल पंचायत में राशन पहुचाकर वितरण प्रारंभ किया गया। कलेक्टर संबित मिश्रा के निर्देश पर राहत शिविरों में संचालित उचित मूल्य दुकानों को मूल पंचायत में संचालन के तहत् जिले के धुर माओवाद प्रभावित क्षेत्र उसूर के ग्राम पंचायत कोण्डापल्ली में विगत 25 वर्षों से अन्यत्र संचालित राशन दुकान को मूल पंचायत में संचालित कर कार्डधारी उपभोक्ताओं को राशन का वितरण किया जा रहा है। पहले सड़क मार्ग की सुविधा नही हाने से कार्डधारियों को पैदल 20 से 25 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। लेकिन नियद नेल्लानार योजना के तहत् नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को बुनियादी सुविधाओं के साथ-साथ शासन की अति महत्वपूर्ण योजना पीडीएस का लाभ अब उनके गांव में मिल रहा है। कोण्डापल्ली के मूल पंचायत में आजादी के बाद पहली बार राशन मिलना संभव हो पाया। प्रशासन के त्वरित पहल पर उचित मूल्य दुकान भवन, पंचायत भवन निर्माण प्रारंभ कर दिया गया है। वर्तमान में कंटेनर में राशन भंडारण कर वितरण प्रारंभ कर दिया गया है। कलेक्टर संबित मिश्रा ने पदस्थापना के पश्चात् ऐसे गांव जो 3 किलोमीटर की दूरी पर हो एवं कार्डधारियों को राशन लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता है एसे स्थानों का चिन्हाकंन कर नवीन दुकान खोलने के निर्देश के परिपालन में खाद्य विभाग द्वारा अंदरूनी क्षेत्र के कुल 15 नवीन दुकान पुसकोंटा, पेरमपल्ली, एटेपाल, कोयाईटपाल, मुकरम, कोतापाल, अन्नारम, मीनूर, कांवड़गांव, पालनार, पेदागेल्लूर, धरमारम, चुटवाही, पाकेला, यमपुर जैसे अतिसंवेदनशील क्षेत्र में उचित मूल्य दुकान प्रारंभ कर ग्रामीणों को उनके मूल पंचायत से राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रशासन की त्वरित पहल पर उन ग्रामों में गोदाम निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया है। कार्डधारी उपभोक्ता एवं ग्रामीण मूल पंचायत से राशन मिलने से बहुत खुश है एवं 20 साल की समस्या से आजादी मिलने की बात कहते है एवं जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते है। नियद नेल्लानार के तहत अरूदंनी क्षेत्रों में पात्र परिवारों को नवीन राशन कार्ड वितरण- धुर माओवाद प्रभावित क्षेत्र के अंदरूनी ग्रामों में जिला प्रशासन द्वारा शिविर लगाया जाकर बुनियादी सुविधाओं का लाभ दिया जा रहा है।

लक्ष्य बनाकर जीवन में आगे बढ़े सफलता निश्चित ही मिलेगी : कलेक्टर बिपिन मांझी

कलेक्टर ने किया विकासखंड स्तरीय राष्ट्रीय युवा महोत्सव का शुभारंभ

नारायणपुर(विश्व परिवार)। राष्ट्रीय युवा महोत्सव जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन बालक हायर सेकेंडरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नारायणपुर में कलेक्टर बिपिन मांझी की अध्यक्षता में शुभारंभ किया गया। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरक के रूप में जो कार्य किए है वो अतुलनीय है, उनके बताएं मार्ग पर जाने के लिए आव्हान करते हुए कहा कि विवेकानंद युवा संघर्ष के लिए जीवन में जो कार्य किए हैं उनको अपनाने की आवश्यकता है। युवाओं से कहा कि जीवन में अपने लक्ष्य को जोश जुनून और सुरक्षित के साथ आगे बढ़े ताकि अपने लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त की जा सके। उन्होंने हमेशा देश सेवा और समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने विद्यार्थियों से अपील किया है। कार्यक्रम को शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष सुदीप झा, पार्षद जैकी कश्यप, जिला शिक्षा अधिकारी रमेश निषाद ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम में स्कूली छात्र-छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत की गई। विद्यालय परिसर में स्कूली छात्र-छात्राओं के द्वारा विभिन्न विज्ञान प्रदर्शनी स्टॉल लगाई गई थी, जिसका कलेक्टर ने अवलोकन किया। इस अवसर पर स्वामी आत्मानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय जन भागीदारी समिति के अध्यक्ष नरेंद्र मेश्राम, खेल अधिकारी डॉ सुमित गर्ग, परियोजना अधिकारी महेंद्र देहारी, प्राचार्य मनोज बागड़े सहित विभिन्न विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे। प्रत्येक विधा हेतु 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग निर्धारित किया गया है। प्रत्येक विधा में निर्धारित संख्या के आधार पर प्रतिभागी भाग ले सकेंगे। विकासखण्ड युवा उत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले कलाकार, प्रतिभागी को ही जिला स्तरीय युवा उत्सव में तथा जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को राज्य स्तर में भाग लेने की पात्रता होगी। यदि किसी विधा में प्रतिभागी का राष्ट्रीय स्तर के लिए चयन होता है तो उसके नीचले कम के दल अथवा प्रतिभागी को राज्य स्तरीय आयोजन में भाग लने का अवसर प्राप्त होगा।

व्यापार समाचार

कोटक सिक्योरिटीज ने 2025 के लिए मार्केट आउटलुक जारी किया

मुंबई: कोटक सिक्योरिटीज लिमिटेड ने 2025 के लिए अपनी मार्केट आउटलुक रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट में मैक्रो-इकोनॉमिक दृष्टिकोण के साथ-साथ इक्विटी, कमोडिटी और करेंसी आउटलुक को भी शामिल किया गया है, जिन पर निवेशक आने वाले साल में ध्यान दे सकते हैं। कोटक सिक्योरिटीज के एमडी और सीईओ, श्रीपाल शाह ने कहा, भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाए हुए है, जो इसे वैश्विक निवेशकों के लिए एक आकर्षक निवेश स्थान बनाता है। हम भारत की दीर्घकालिक विकास क्षमता पर पूरा भरोसा करते हैं, लेकिन इसके साथ ही हम निवेशकों को सतर्क आशावाद के साथ बाजार में दृष्टिकोण अपनाने की सलाह देते हैं। हमें उम्मीद है कि 2025 में इक्विटी बाजार को और गति मिलेगी और कमोडिटी अपने ऐतिहासिक उच्चतम स्तर को पार करेंगी। साथ ही, युवा निवेशकों का शेयर बाजार में शुरुआती निवेश के जरिए संपत्ति बनाने का बढ़ता रुझान बाजार की ग्रोथ में योगदान देगा। कोटक सिक्योरिटीज मार्केट आउटलुक 2025 रिपोर्ट में 2025 के लिए मुख्य प्रवृत्तियों और प्रभावों का विवरण दिया गया है।

इक्विटी मार्केट: मध्यम से दीर्घकालिक में व्यापक बाजार में हल्की वृद्धि की उम्मीद है। घरेलू बुनियादी स्थिति मजबूत बनी रहेगी, लेकिन सतर्क आशावाद की समय की आवश्यकता है। दीर्घकालिक निवेशकों को उच्च मूल्यांकन के बीच एसेट क्वालिटी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। वैश्विक अर्थव्यवस्थाएं स्थिर हो रही हैं क्योंकि मौद्रिक नीतियां नरमी की ओर बढ़ रही हैं, जिसमें अमेरिका, यूरोप और एशिया में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद है। घरेलू स्तर पर, मुद्रास्फीति उच्च बनी हुई है, विशेष रूप से खाद्य कीमतें। हालांकि, अगर त्रष्ठक्कअचानक गिरती है, तो फरवरी की नीति में ब्याज दर में कटौती की संभावना बढ़ सकती है।

अमेज़न ने संभव के पांचवें वार्षिक सम्मलेन के मौके पर विकसित भारत के प्रति ज़ाहिर की अपनी प्रतिबद्धता

नई दिल्ली : अमेज़न ने सालाना आयोजित होने वाले अपने 'संभव समिट' के पांचवें संस्करण में 'विकसित भारत' के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता का विस्तार करने वाली कई पहलों की घोषणा की है। संभव समिट, अमेज़न के भारत के छोटे व्यवसायों का जश्न मनाने, उनका समर्थन करने और उन्हें सशक्त बनाने से जुड़े प्रयास का अंग है, जिसका उद्देश्य है, भारत और दुनिया भर में उन व्यवसायों के विकास में तेज़ी लाना। अमेज़न ने इस प्रयास के तहत, भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की सरकार की प्रमुख प्राथमिकता को गति देने के लिए डीपीआईआईटी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया हैं। अमेज़न ने अपने संभव वेंचर फंड से 120 मिलियन डॉलर ऐसे स्टार्टअप में निवेश करने के लिए निर्धारित किए हैं जो भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के विनिर्माण को डिजिटल बनाएंगे और घरेलू और वैश्विक मांग को पूरा करेंगे, जिससे हज़ारों की तादाद में रोज़गार पैदा होंगे। अमेज़न अपनी निर्यात प्रतिबद्धता को चार गुना बढ़ा रही है और 2030 तक भारत से कुल 80 अरब डॉलर से अधिक का निर्यात संभव बनाने की योजना बना रही है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि भारतीय एमएसएमई, विनिर्माताओं और डी2सी स्टार्टअप के लिए अमेज़न के ग्लोबल सेलिंग प्रोग्राम के ज़रिये करने के साथ-साथ अमेज़न के ग्लोबल मार्केटप्लेस में बेचे जाने वाले मेड-इन-इंडिया उत्पादों की सोर्सिंग के संयोजन से प्रेरित होगी। अमेज़न विभिन्न क्षेत्रों से निर्यात करने में मदद करना जारी रखेगी, जिसमें घर एवं रसोई से जुड़े उत्पाद, परिधान एवं वस्त्र, खिलौने, स्वास्थ्य एवं न्यूट्रिशन सप्लीमेंट, आयुर्वेदिक उत्पाद आदि शामिल हैं। अमेज़न इसके अलावा, अब पूरे भारत के व्यवसायों को अपनी विश्व स्तरीय, विश्वसनीय और किफायती लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदान करेगी। कंपनी ने विभिन्न क्षमता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 5 फीट से 40 फीट तक के पूर्ण ट्रक लोड विकल्पों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर इंट्रा-सिटी (शहर के भीतर) और इंटर-सिटी (विभिन्न शहरों में) परिवहन सेवाओं के लिए 'अमेज़न फ्रेट' और 14,000 से अधिक पिन कोड में सेवा प्रदान करने वाली लास्ट माइल (अंतिम-मील) डिलीवरी सेवाओं के लिए 'अमेज़न शिपिंग' लॉन्च की है और इसके तहत डिलीवरी (डिलीवरी डेट) और पिकअप के लिहाज़ से बेहतर अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था है। माननीय केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, श्री नितिन जयराम गडकरी ने कहा, सरकार के विकसित भारत के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए सभी हितधारकों के सक्रिय योगदान की आवश्यकता है। विनिर्माण, एआई और निर्यात की दिशा में अमेज़न की पहल बहुत सराहनीय है। हम अमेज़न की देश भर में अपनी लॉजिस्टिक्स से जुड़ी विशेषज्ञता का लाभ उठाने की कोशिश को महत्वपूर्ण मानते हैं, जो शहरी से लेकर ग्रामीण इलाकों तक के व्यवसायों को सशक्त बनाता है। निजी क्षेत्र के ऐसे सहयोगात्मक प्रयास नवोन्मेष बढ़ाने, निर्यात को बढ़ावा देने और लॉजिस्टिक्स से जुड़े बुनियादी ढांचे को मज़बूत करने में सहायक हैं, जिससे भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

भारत में शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर में 2030 तक निवेश होंगे 143 लाख करोड़ रुपये

मुंबई(एजेंसी)। भारत में आने वाले वर्षों में गुणवत्तापूर्ण शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर की मांग में इजाफा होगा। इस कारण से भारत 2030 तक इन्फ्रास्ट्रक्चर में 143 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश कर सकता है। यह जानकारी सोमवार को जारी हुई एक रिपोर्ट में दी गई। कोलियर्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि तेजी से हो रहा इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास देश भर में सैटेलाइट टाउनशिप के विकास को बढ़ावा दे रहा है। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि 2030 तक होने वाले इस व्यय का अधिकांश भाग शहरी क्लस्टर्स की ओर निर्देशित किया जाना है, जिससे शहरी क्षेत्रों में इन्फ्रास्ट्रक्चर के नेतृत्व वाला विकास हो सके। विचाराधीन परियोजनाओं में हवाई अड्डे, इंटर-सिटी मेट्रो कनेक्टिविटी, एयरोसिटी, हाइवे, हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर, आईटी + आईटीईएस जोन, बड़े डेटासेंटर कंसंट्रेशन जोन और अन्य शामिल हैं। रिपोर्ट में बताया गया कि यह ट्रेंड मुंबई मेट्रोपोलिटन रीजन में देखा जा रहा है। मुंबई और उसके आसपास के लोकेशन की योजनाबद्ध तरीके से भीड़भाड़ कम करने का काम किया जा रहा है।

हर सीरीज में एक विलेन की जरूरत होती है और सिराज अब वह विलेन है

नई दिल्ली(एजेंसी)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान माइकल क्लार्क ने कहा कि भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को अंपायरों से एलबीडब्ल्यू आउट होने की अपील किए बिना विकेट का जश्न मनाने की आदत के लिए जुर्माना लगाया जाना चाहिए, और उन्होंने आईसीसी द्वारा उन्हें इसके लिए दंडित नहीं किए जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया। सिराज एडिलेड में 140 रन पर आउट होने के बाद ट्रैविस हेड के साथ अपने सेंड-ऑफ विवाद के लिए सुर्खियों में रहे हैं। क्लार्क की टिप्पणी सिराज द्वारा मार्नस लाबुशेन के खिलाफ एलबीडब्ल्यू आउट होने पर अंपायर की ओर देखे बिना सेलिब्रेट करने के उदाहरण की ओर इशारा करती है, लेकिन रीप्ले में गेंद का अंदरूनी किनारा बड़ा दिखाई देता है। सिराज पर लगातार एलबीडब्ल्यू की अपील करने और अंपायर से न पूछने के लिए जुर्माना लगाया जाना चाहिए। वह बल्लेबाज के पैड पर गेंद मारता है और ऐसे भागता है जैसे वह आउट हो। मुझे आश्चर्य है कि आईसीसी ने उस पर जुर्माना नहीं लगाया, क्योंकि मुझे याद है कि जब मैं खेल रहा था, तो हर बार जुर्माना लगाया जाता था। ब्रेट ली इस मामले में सबसे खराब थे और उन्होंने उनसे कहा, अगर आप पीछे मुड़कर अंपायर से नहीं पूछेंगे, तो आप पर जुर्माना लगाया जाएगा। मैं सिराज से इस बात को लेकर उनसे और ट्रैविस हेड से ज्यादा चिंतित हूं। सिराज ने पहले टेस्ट में भी ऐसा किया था। क्लार्क ने सोमवार को बिग स्पोर्ट्स ब्रेकफास्ट शो में कहा, आप जो चाहें उसके लिए अपील कर सकते हैं, लेकिन आपको पीछे मुड़कर अंपायर से पूछना होगा। मुझे वास्तव में आश्चर्य है कि उस पर जुर्माना नहीं लगाया गया। ट्रैविस हेड को भी सेंड-ऑफ देना, उसे बेवकूफ बनाने जैसा था। उस व्यक्ति ने अभी-अभी 140 रन बनाए हैं; किसी को सेंड-ऑफ दें जिसने पांच रन बनाये हों न कि 140। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज स्टुअर्ट क्लार्क ने क्लार्क के विचारों से सहमति जताते हुए कहा कि सिराज की यह आदत हेड के साथ उनके शब्दों के आदान-प्रदान से कहीं बड़ी समस्या है। मुझे लगता है कि यह (हेड) घटना में जो हुआ, उससे कहीं ज़्यादा बुरा है। और यह बात कई बार सामने आई और इस पर चर्चा हुई कि आप ऐसा नहीं कर सकते। क्लार्क ने कहा, अंपायर काफ़ी स्पष्ट हैं, और नियम भी, कि आपको पीछे मुड़कर सम्मान दिखाना होगा और अंपायर से पूछना होगा कि क्या यह आउट है। यह अच्छा नहीं लग रहा था, वह विकेट के नीचे भागा, आगे बढ़ा, यह आउट है ... फिर जब उन्होंने रीप्ले दिखाया, तो उसने गेंद को अंदर की तरफ़ से अपने पैड पर मारा था। अगर मैं मैच रेफरी या अधिकारी होता, तो मैं कुछ इस तरह कहता, दोस्त, इसे रोकना होगा, क्योंकि यह अच्छा नहीं लगता और इससे अंपायर पर बहुत दबाव पड़ता है, वह भी अनुचित तरीके से। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया में कई रिपोर्ट्स में कहा गया है कि हेड और सिराज को आचार संहिता के उल्लंघन के लिए आईसीसी प्रतिबंधों का सामना करना पड़ेगा, क्लार्क ने कहा कि उन्हें दोनों के बीच झड़प से कोई बड़ी समस्या नहीं है, हालांकि उन्हें लगता है कि इस घटना ने सिराज को बाकी सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलियाई जनता की नज़र में खलनायक बना दिया है। हेड के साथ झड़प के बाद, सिराज को पिंक-बॉल टेस्ट में गेंदबाजी या बल्लेबाजी करने के लिए आते समय एडिलेड ओवल की भीड़ से हूटिंग का सामना करना पड़ा। मुझे उम्मीद है कि खेल जारी रहेगा।

जिस तरह से ऑस्ट्रेलिया ने भारी दबाव में जवाब दिया वह बहुत बड़ी बात थी : टिम पेन

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट कप्तान टिम पेन ने पैट कमिंस की अगुआई वाली टीम की भारी दबाव में वापसी करने और एडिलेड ओवल में गुलाबी गेंद के टेस्ट में भारत के खिलाफ दस विकेट से जीत हासिल करने की क्षमता की प्रशंसा की। पर्थ में पहले टेस्ट में 295 रनों से करारी हार झेलने के बाद, ऑस्ट्रेलिया ने एडिलेड ओवल में खेल के सभी पहलुओं में भारत पर दबदबा बनाया और पांच मैचों की श्रृंखला 1-1 से बराबर कर ली। कप्तान पैट कमिंस (2-41 और 5-57) और तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क (6-48 और 2-60), बल्लेबाज ट्रैविस हेड (140) और मार्नस लाबुशेन (64) ऑस्ट्रेलिया की बड़ी जीत के मुख्य सूत्रधार थे, जो 14 दिसंबर से ब्रिस्बेन में शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट से पहले आत्मविश्वास बढ़ाने का काम करता है। मुझे लगा कि थोड़ी राहत मिली होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। हमने कुछ दिन पहले उन पर पड़ने वाले दबाव और लोगों द्वारा देखी जाने वाली प्रतिक्रिया के बारे में बात की थी। यह टीम कई बार कठोर व्यवहार वाली टीम है, लेकिन वे बेहतरीन टीमों में से एक हैं। उन्होंने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को छोड़कर सब कुछ जीता है और वे जानते हैं कि, उन्होंने इसके बारे में बात की है, यह वही है जिसे वे जीतना चाहते हैं। मुझे लगा कि जिस तरह से उन्होंने भारी दबाव में जवाब दिया वह बहुत बड़ी बात थी, हालांकि गुलाबी गेंद के टेस्ट में जहां हमारा रिकॉर्ड शानदार है और भारत को ऐसा देखने को नहीं मिलता है। पेन ने एसईएन रेडियो पर कहा, मुझे लगता है कि बड़े खिलाड़ी खड़े हुए, खासकर कप्तान पैट कमिंस, मिशेल स्टार्क - गुलाबी गेंद के जादूगर, ट्रैविस हेड कमाल के थे और मार्नस मुझे लगता है कि वाकई बहुत अच्छे थे।

पिछले चार वर्षों में भारत में एफडीआई प्रवाह 1,000 बिलियन अमेरिकी डॉलर के पार

नई दिल्ली(एजेंसी)। उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 के बीच भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह बढ़कर 1,033.40 बिलियन डॉलर हो गया है, जो देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में बढ़ते निवेश के अवसरों को दर्शाता है। एफडीआई से लाभान्वित होने वाले अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रों में ऑटोमोबाइल, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, आईटी हार्डवेयर, दूरसंचार, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन और सेवाएं शामिल हैं। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि उभरते गैर-पारंपरिक ऊर्जा क्षेत्र में एफडीआई प्रवाह में बड़ी उछाल दर्ज की गई है। एफडीआई प्रवाह से अर्थव्यवस्था में अधिक निवेश और रोजगार सृजन होता है और अत्याधुनिक तकनीक आती है जो उत्पादकता के स्तर को बढ़ाती है और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि सरकार ने व्यापार करने में आसानी को सुगम बनाया है और पीएलआई योजना जैसे विभिन्न प्रोत्साहन लागू किए गए हैं, जिससे देश में एफडीआई के प्रवाह में तेजी लाने में मदद मिली है। डीपीआईआईटी के आंकड़ों से पता चलता है कि चालू वित्त वर्ष में एफडीआई में उछाल जारी रहा है और अप्रैल-सितंबर में यह 45 प्रतिशत बढ़कर 29,790 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि 2023-24 के दौरान इसी अवधि में यह 20,488 मिलियन अमरीकी डॉलर था। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही के दौरान सेवाओं में एफडीआई बढ़कर 5.69 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 3.85 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

एशियन पेंट्स ने लॉन्च किया 'ग्राफीन' की शक्ति वाला पुनर्नवीनीकरण एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक

रायपुर : हमारे घरों के बाहरी हिस्सों को लगातार भारी बारिश, तेज धूप और धूल की परेशानी का सामना करना पड़ता है। समय के साथ इसका असर घरों के स्वरुप और स्थायित्व पर पड़ सकता है जिसके चलते घर के मालिकों को लंबी अवधि के समाधान की तलाश करनी पड़ती है। पूरे भारत में मकान मालिकों के भरोसेमंद एशियन पेंट्स ने घर की बाहरी दीवारों के लिए अपने प्रमुख पेंट एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक (लैमिनेशन पेंट के रूप में भी प्रचलित) को ग्राफीन की शक्ति द्वारा एक उच्च स्तर प्रदान किया है। ग्राफीन एक क्रांतिकारी पदार्थ है जिससे बेजोड़ सुरक्षा और ताकत मिलती है। यह पुनर्नवीनीकरण पेंट 12 साल की वारंटी के साथ बाहरी दीवालों की सुरक्षा के लिए शीर्ष विकल्प बनकर उभरा है। अब तक का सबसे हल्का लेकिन सबसे मजबूत पदार्थ ग्राफीन अपनी उच्च ताकत, लचीलेपन और स्थायित्व के साथ उद्योगों में बदलाव ला रहा है। अब, यह एशियन पेंट्स एपेक्स अल्टिमा प्रोटेक को एक मजबूत अवरोधक बनाता है जो घरों को यूवी फेडिंग, दरारों और पानी से होने वाले नुकसान से बचाता है। ग्राफीन का उन्नत प्रत्यास्थलक (इलास्टोमेरिक) गुण भारतीय घरों के लिए सबसे मजबूत और सबसे विश्वसनीय सुरक्षा है। इस नए अल्टिमा प्रोटेक को जीवंतता प्रदान करने के लिए, एशियन पेंट्स ने ब्रांड एंबेसडर रणबीर कपूर के साथ नये अभियान, द सेफ हाउस की शुरुआत की है।

इस विज्ञापन में, रणबीर कपूर को पहली बार एक जासूस के रूप में देखा जा सकता है, जो रोमांचक तरीकों के इस्तेमाल से खतरनाक परिस्थितियों से बच निकलता है। विज्ञापन मोरक्को के एक बाजार में शुरू होता है जो कि दर्शकों को एक साहसिक मिशन दिखाता है।

एनएचसी फूड्स लिमिटेड का रु. 47.42 करोड़ का राइट्स इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए 5 दिसंबर, 2024 से खुला

वलसाड। मसाला, अनाज, तेलबीज, सूखा मेवा और अन्य कृषि उत्पाद के निर्यात व्यापार से जुड़ी गुजरात स्थित नेशनल हेल्थ कॉरपोरेशन फूड्स लिमिटेड (BSE -517554) का 47.42 करोड़ का राइट्स इश्यू 5 दिसम्बर, 2024 से सब्सक्रिप्शन के लिए ओपन हुआ है। 6 दिसम्बर, 2024 को प्रति शेयर 2.76 की मौजूदा बाजार कीमत के सामने कंपनी प्रति शेयर 1 रुपए की आकर्षक कीमत पर राइट्स इश्यू ऑफर कर रही है। राइट्स इश्यू 18 दिसम्बर, 2024 को बंद होगा। निवेशक कंपनी के राइट्स इश्यू में 1 रुपए की कीमत पर लेने / सब्सक्राइब करने के लिए राइट्स एनटाईटलमेंट्स (BSE सिम्बोल: NHCFO-RE) भी खरीद सकते हैं। राइट्स अधिकारों के ऑन मार्केट त्याग की अंतिम तिथि 12 दिसंबर, 2024 है।

सूचित राइट्स इश्यू का राइट एंटाईटलमेंट्स 4:1 रेश्यो है (रेकॉर्ड तारीख 26 नवंबर, 2024 को इक्विटी शेयर धारकों द्वारा रखे गए प्रत्येक 1 फुल्ली पैड इक्विटी शेयर के सामने प्रत्येक 1 रुपए की फेस वैल्यू के 4 राइट्स इक्विटी शेयर) कंपनी प्रत्येक 1 की कीमत प्रति शेयर 1 रुपए की फेस वैल्यू के 47.42 करोड़ फुल्ली पेड अप इक्विटी शेयर्स इश्यू करेगी जिसका मूल्य 47.42 करोड़ है।

काइनेटिक ग्रीन ने डिजिटल एवं कनेक्टेकड डिस्प्ले प्लेसटफॉर्म्स तथा एनालिटिक्से को लॉन्च करने के लिये जियोथिंग्स लिमिटेड के साथ साझेदारी की

पुणे: काइनेटिक ग्रीन एनर्जी एंड पावर सॉल्यूशंस लिमिटेड, भारत की अग्रणी इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर और थ्री-व्हीलर निर्माता कंपनी, ने जियोथिंग्स लिमिटेड के साथ एक नई और महत्वपूर्ण साझेदारी की घोषणा की है। जियोथिंग्स, जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड की सहायक कंपनी और रिलायंस ग्रुप का हिस्सा है। यह सहयोग टिकाऊ परिवहन के समाधान को बढ़ावा देने और इलेक्ट्रिक वाहनों में यूजर अनुभव को बेहतर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस भागीदारी के तहत, काइनेटिक ग्रीन ने अपने इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर प्लेटफॉर्म्स के लिए स्मार्ट टीएफटी-बेस्ड डिजिटल और कनेक्टेड डिस्प्ले प्लेटफॉर्म पेश किया है। यह प्लेटफॉर्म न केवल राइडिंग अनुभव को पूरी तरह से बदलने के लिए तैयार है, बल्कि इसमें एडवांस फीचर्स भी शामिल हैं, जैसे:रियल-टाइम नेविगेशन, जिससे राइडर्स हर समय सही रास्ते पर रहें, इनकमिंग कॉल नोटिफिकेशन, जिससे महत्वपूर्ण कॉल्स मिस न हों और नजदीकी चार्जिंग स्टेशन्स की जानकारी, जिससे वाहन चार्जिंग से जुड़ी किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े।यह स्मार्ट डिस्प्ले न केवल उपयोग में आसान है, बल्कि इसे खास तौर पर आधुनिक यात्रियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। चाहे शहर की भीड़-भाड़ हो या लंबे सफर की योजना, यह नई तकनीक राइडर्स को हमेशा कनेक्टेड और अपडेटेड रखेगी, जिससे सफर का हर पल सहज और मजेदार बनेगा। इस साझेदारी के तहत, काइनेटिक ग्रीन ने ऐसे स्मार्ट फीचर्स पेश किए हैं जो यूजर्स को वाहन के साथ जुड़े रहने और उसकी बेहतर निगरानी का अनुभव देते हैं। इन फीचर्स में बिल्ट-इन ब्लूटूथ और टेलीमैटिक्स-सक्षम डिवाइस शामिल हैं, जो कनेक्टिविटी को बिना किसी रुकावट के सुनिश्चित करते हैं।राइडर्स अब अपने स्मार्टफोन्स के माध्यम से वाहन की अहम जानकारियों को आसानी से देख और प्रबंधित कर सकते हैं। इनमें रियल-टाइम नेविगेशन, गाड़ी की स्पीड, बैटरी चार्ज का स्टेटस और डिस्टेंस टू एम्प्टी (बैटरी खत्म होने से पहले कितनी दूरी तय की जा सकती है) जैसी जानकारियां शामिल हैं। ये सभी फीचर्स राइडिंग अनुभव को न केवल सरल बनाते हैं, बल्कि इसे पहले से ज्यादा अनुकूल और मजेदार भी बना देते हैं।इस समाधान को जियो के उन्नत हार्डवेयर के साथ जोड़ा गया है, जिसे जियो की मजबूत 4जी कनेक्टिविटी का पूरा समर्थन मिलता है।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, खण्ड-बेमेतरा (छ.ग.)

Phone No. : 07824-222118 email : eebem-phe-cg@nic.in

निआसू.क्र 46/तशा/का.अ./लो.स्वा.यां.खंड/2024-25 बेमेतरा, दिनांक ....

मैनुअल पद्धति अल्प निविदा आमंत्रण सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी के पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र 'ए' में निम्नांकित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है :-

कार्य का विवरण :- विकासखण्ड साजा के विभिन्न ग्रामों में उच्चस्तरीय जलागार रिपेयरिंग एवं बाउण्ड्रीवॉल निर्माण कार्य दिये गये शेड्यूल अनुसार।

क्र.	विकास खण्ड	ग्राम का नाम	अनुमानित लागत (रु.लाख में)
1	साजा	तेन्दूवा	6.75
2	साजा	बनरांका,	3.71
3	साजा	उमरावनगर	3.35
4	साजा	जेवरा	3.68
5	साजा	कारेसरा	3.35
6	साजा	हाथीडोब	3.30
7	साजा	अकलवारा	3.64
8	साजा	हरडूवा	3.64
9	साजा	मुसवाडीह	2.64
10	साजा	देउरगांव	3.61
11	साजा	बोरतरा	3.30
12	साजा	खुरूसबोड आर	3.55

निविदा प्रपत्र प्राप्त करने के लिये आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 12.12.2024 संध्या 5.30 बजे तक है तथा अधोहस्ताक्षरकर्त्ता के कार्यालय में भरे हुए निविदा प्रपत्र दिनांक 17.12.2024 को संध्या 5.30 बजे तक स्पीड पोस्ट द्वारा स्वीकार किये जा सकेंगे। उपरोक्त कार्य की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज, निविदा का विस्तृत विवरण व अन्य जानकारी विभागीय वेबसाईट https://phed.cg.nic.in/eproject/nit/ में दिनांक 12.12.2024 को संध्या 10.00 बजे तक देखी जा सकती है।

G-242504427/3

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड
बेमेतरा (छ.ग.)

दैनिक
विश्व परिवार महानगर
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, बुधवार 11 दिसम्बर 2024

रायपुर जिले में मंगलवार को 15,316 टन धान की हुई खरीदी

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश में जिले के किसानों को समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी की जा रही है। जिले में आज 15 हजार 316 टन धान की खरीदी की गई। जिले में आज 2 हजार 583 किसानों से 23 करोड़ 44 लाख रूपये धान की खरीदी हुई। इस प्रकार अब तक 139 उपार्जन केन्द्रों में 53 हजार 498 किसानों से 02 लाख 23 हजार 419 टन धान की खरीदी हुई है। इन किसानों से अब तक 539 करोड़ 43 लाख रूपये की धान की खरीदी की गई है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर धान केन्द्रों में किसानों को आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान की जा रही है। जिससे किसानों में धान बेचने को लेकर उत्साह है।

संक्षिप्त समाचार

सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने नई दिल्ली में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू से मुलाकात की

रायपुर (विश्व परिवार)। इस दौरान रायपुर के स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट से अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने शुरू करने के संबंध में एयरपोर्ट पर कस्टम, इमिग्रेशन ऑफिस, कार्गो हब, नाइट पार्किंग सुविधा विकसित करने को लेकर व्यापक चर्चा कर रायपुर एयरपोर्ट के उन्नयन के लिए अपने विचार साझा किए। बैठक का उद्देश्य छत्तीसगढ़ की कनेक्टिविटी को मजबूत बनाना और इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई ऊंचाइयों पर ले जाना था। इस अवसर पर सांसद श्री जगदंबिका पाल और विधायक श्री सुनील सोनी भी उपस्थित रहे।

ई टीवी तेलगु के डांस शो में नजर आएंगे राजधानी रायपुर के डांसर

रायपुर (विश्व परिवार)। किसी ने ठीक ही कहा है बड़े सपने देखने वाले अपने सपनों की उड़ान किसी से पूछकर नहीं भरते। रायपुर के रितेश, अदीबा और धमतरी के लिलेश 11 दिसंबर से ई टीवी तेलगु में प्रसारित होने वाले साऊथ के सबसे बड़े डांस शो में बिखेरेंगे अपनी कला का जादू। ये तीनों मनीष चंदानी की डांस स्कूल के विद्यार्थी हैं। मनीष चंदानी ने पहले रितेश को डांस प्लस प्रो जैसे दमदार शो के लिए तैयार किया था और रितेश 2024 डांस प्लस प्रो के विनर भी रह चुके हैं। रितेश के जीवन का एकमात्र उद्देश्य है कि वे अच्छे डांसर बने और अपने सपने को साकार करने के लिए उन्होंने खुली आंखों से सपने देखे, जो अब सच होने जा रहे हैं। अदीबा कुरैशी भी एक जुनूनी कलाकार बनने का सपना देखती है और उसका परफॉर्मेंस देखकर साऊथ के शो में आए जज इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अदीबा को फिल्म के लिए ऑफर दिया है। धमतरी जैसे छोटे शहर के लिलेश को अपनी कला पर विश्वास है और प्रेम भी। रितेश, अदीबा और लिलेश 11 दिसंबर को रात 9.30 बजे से प्रसारित होने वाले साऊथ के सबसे बड़े डांस शो में नज़र आएंगे। अपने सपनों को सच करने के लिए रितेश, अदीबा और लिलेश लगातार अपने गुरु मनीष चंदानी से प्रशिक्षण ले रहे हैं।

साहित्य सृजन संस्थान की काव्य संध्या एवं कवियों का सम्मान

रायपुर (विश्व परिवार)। साहित्य सृजन संस्थान, रायपुर द्वारा 15 दिसंबर, 2024 को आयोजित काव्य संध्या में रचनाकारों का काव्य

पाठ एवं सम्मान का कार्यक्रम वृंदावन हॉल सिविल लाइन्स रायपुर में दोपहर 2 बजे से संध्या 6 बजे तक आयोजित है। साहित्य सृजन संस्थान के इस 28 निरंतर जारी मासिक काव्य संध्या कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ संजय अलंग पूर्व आईएस संभागायुक्त, रायपुर होंगे।इस काव्य संध्या में कोरबा, बिलासपुर, दल्ली राजहरा, बालोद, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव, बागबाहरा, खरोरा, महासमुंद, राजधानी रायपुर से विशिष्ठ रचनाकार शामिल होकर अपना काव्य पाठ करेंगे। काव्य संध्या के मध्य में श्री एम.गुरुनाथ, (दृष्टिहीन)प्रधान पाठक, शासकीय गोकुल राम वर्मा प्राथमिक शाला रामनगर, रायपुर को साहित्य सृजन कर्मशील सम्मान के साथ श्रेष्ठ काव्य पाठ सम्मान श्रीमती रीना अधिकारी रायपुर, एवं डॉ.वेणुधर रौतिया रायपुर व श्रीमती नूरुस्सबाह 'सब' दुर्ग द्वय को श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। संस्था के अध्यक्ष वीर अजीत शर्मा ने बताया कि साहित्य सृजन संस्थान विगत दो वर्षो से निरंतर युवा रचनाकारों को मंच प्रदान कर उनकी प्रतिभा में निखार लाने के साथ साथ प्रोत्साहित और सम्मानित भी कर रहा है।

उप्र के मुख्यमंत्री योगी ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री साय के लिए भेजा महाकुंभ में शामिल होने का आमंत्रण

महाकुंभ में जाने वाले छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं के लिए प्रयागराज में राज्य सरकार लगाएगी पंडाल, लोगों के ठहरने और भोजन की रहेगी व्यवस्था

रायपुर (विश्व परिवार)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को प्रयागराज के पवित्र संगम में वर्ष 2025 में आयोजित हो रहे महाकुंभ में शामिल होने का आमंत्रण भेजा है। उन्होंने सभी छत्तीसगढ़ वासियों को भी महाकुंभ में आमंत्रित किया है।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की ओर से उनका आमंत्रण लेकर उत्तर प्रदेश के आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री श्री सुनील कुमार शर्मा और समाज कल्याण राज्य मंत्री श्री संजय गोंड ने मुख्यमंत्री श्री साय से सौजन्य मुलाकात की और उन्हें आमंत्रण पत्र, पवित्र गंगा जल और कुंभ का प्रतीक चिन्ह सौंप कर उन्हें महाकुंभ में आमंत्रित किया। मंत्री श्री सुनील कुमार शर्मा ने मुख्यमंत्री से यह भी आग्रह किया कि कुंभ स्थल पर छत्तीसगढ़ का भी एक पंडाल लगाया जाए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ के पंडाल के लिए स्थान उपलब्ध कराने के लिए उत्तर

उत्तरप्रदेश के दो मंत्रियों ने पवित्र गंगा जल और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सीएम विष्णुदेव साय को आमंत्रित किया

प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम एक पत्र मंत्रीद्वय को सौंपा। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि पंडाल में छत्तीसगढ़ से कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं के ठहरने और भोजन की व्यवस्था रहेगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने मंत्री द्वय का छत्तीसगढ़ में आत्मीय स्वागत करते हुए आमंत्रण के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि महाकुंभ में शामिल होना सौभाग्य का विषय है। वे पहले भी कुंभ में शामिल होते रहे हैं, लेकिन इस बार का कुंभ विशेष है। आमंत्रण देने के लिए मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने दो-दो मंत्रियों को भेजा है। हम महाकुंभ में जरूर आएंगे।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि मैंने मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से अनुरोध किया है कि छत्तीसगढ़ प्रयागराज महाकुंभ 2025 के अवसर पर महाकुंभ में आने वाले देश-विदेश के श्रद्धालुओं को इस प्रदेश की संस्कृति, विकास और उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए उत्सुक है। छत्तीसगढ़ से महाकुंभ के दर्शन के लिए जाने वाले श्रद्धालुओं के भोजन एवं रहने-ठहरने की व्यवस्था हेतु महाकुंभ क्षेत्र में छत्तीसगढ़ के लिए भूमि आरक्षित करने का अनुरोध भी मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से किया है।

महाकुंभ के लिये छत्तीसगढ़ से चलेंगी ये तीन स्पेशल ट्रेनें

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 2025 में होने वाले महाकुंभ में जाने वाले यात्रियों के लिये खुशखबरी है। 13 जनवरी से शुरू होने वाले महाकुंभ 2025 के लिये दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से कुंभ मेला स्पेशल तीन ट्रेनों की सुविधा शुरू होगी।

महाकुंभ मेले के दौरान श्रद्धालुओं के लिए छत्तीसगढ़ और प्रयागराज के बीच रायगढ़, बिलासपुर और दुर्ग कुंभ मेला स्पेशल ट्रेन की सुविधा मिलेगी। इससे गोंदिया, दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़, बालाघाट, नैनपुर, अनूनपुर, शहडोल एवं उमरिया के मध्य दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के यात्रियों को फायदा मिलेगा। प्रयागराज महाकुंभ के दौरान संगम में स्नान करने के लिए प्रयागराज आने वाले यात्रियों को अधिक से अधिक सुविधाएं मिल सके, इसके लिये रेलवे 3 हजार स्पेशल गाडियां और 13 हजार से ज्यादा ट्रेनें चलायी जाएंगी। इसी कड़ी में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से तीन कुंभ मेला स्पेशल ट्रेनों का परिचालन होगा। महाकुंभ मेले के दौरान ट्रेन में होने वाली अतिरिक्त भीड़-भाड़ के दौरान रेल यात्रियों को अधिक से अधिक कन्फर्म बर्थ/सीट की सुविधा उपलब्ध कराने के लिये दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की ओर से तीन कुंभ मेला स्पेशल ट्रेने चलाई जायेंगी, जो रायगढ़-वाराणसी, दुर्ग-वाराणसी एवं बिलासपुर-वाराणसी के मध्य तीन फेरे के लिए चलाई जा रही है। 08251/08252 रायगढ़-वाराणसी-रायगढ़ कुंभ मेला स्पेशल, 08791/08792 दुर्ग-वाराणसी-दुर्ग कुंभ मेला स्पेशल एवं 08253/08254 बिलासपुर-वाराणसी-बिलासपुर कुंभ मेला स्पेशल ट्रेन व्हाया बिलासपुर, कटनी, प्रयागराज के मार्ग से चलाई जा रही है। बता दें कि प्रयागराज में 13 जनवरी से महाकुंभ मेला शुरू होकर 26 फरवरी तक चलेगा।

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन का 7वां संस्करण आज से रायपुर में होगा शुरू

रायपुर (विश्व परिवार)। स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (एसआईएच) का 7वां संस्करण 11 दिसंबर, 2024 को रायपुर में अमिटी यूनिवर्सिटी में शुरू होगा। साथ ही देशभर 51 केंद्रों पर भी इसका प्रारंभ होगा। केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान वर्चुअल माध्यम से इस कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। अमिटी यूनिवर्सिटी छत्तीसगढ़ में एसआईएच की मेजबानी करेगी। कुलपति डॉ. पीयूष कांत पांडे ने बताया कि इस अत्यधिक प्रत्याशित कार्यक्रम में तेरह राज्यों की 31 टीमें, जिसमें 186 प्रतिभागी (103 पुरुष और 83 महिलाएं), 28 मेंटरों की देखरेख में भाग लेंगे। इस कार्यक्रम को उद्योग और अकादमिक दोनों क्षेत्रों के विशेषज्ञों सहित 15 प्रतिष्ठित जूरी सदस्यों की उपस्थिति से और समृद्ध किया जाएगा, जो प्रतिभागियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करेंगे।

एसआईएच एक राष्ट्रव्यापी पहल है और

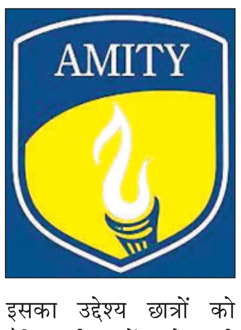

इसका उद्देश्य छात्रों को दैनिक जीवन में आने वाली कुछ गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए मंच प्रदान करके उत्पाद नवाचार और समस्या-समाधान मानसिकता की संस्कृति को विकसित करना है। पिछले संस्करणों की तरह, छात्र दल मंत्रालयों/विभागों/उद्योगों द्वारा दिए गए समस्या सुझावों पर काम करेंगे या 17 विषयों में से किसी पर भी छात्र नवाचार श्रेणी में अपना विचार प्रस्तुत करेंगे।

एआईएच 2024 के लिए 54 मंत्रालयों, विभागों, राज्य सरकारों, सार्वजनिक उपक्रमों और उद्योगों द्वारा 250 से अधिक समस्याओं के बारे में विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इस वर्ष संस्थान स्तर पर आंतरिक हैकथॉन में 240 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई है, जो एआईएच 2023 में 900 से बढ़कर एआईएच 2024 में 2247 से अधिक हो गई है, जिससे यह अब तक का सबसे बड़ा संस्करण है। संस्थान स्तर पर एआईएच 2024 में 86, 000 से अधिक टीमों ने भाग लिया है और लगभग 49, 000 छात्र टीमों (प्रत्येक में 6 छात्र और 2 संरक्षक शामिल हैं) को राष्ट्रीय स्तर के चरण के लिए इन संस्थानों द्वारा अनुशंसित किया गया है। एआईएच का ग्रैंड फिनाले विभिन्न मंत्रालयों/सरकारी विभागों के अधिकारियों और छात्रों, शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों के बीच खुली बातचीत के लिए एक खुले मंच के रूप में भी कार्य करता है।

पहचान की गई चुनौतियों और उनके समाधान के तहत राष्ट्रीय महत्व और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के क्षेत्रों से जुड़े 17 प्रमुख क्षेत्र और विषयों में स्वास्थ्य सेवा, आपूर्ति श्रृंखला और रसद, स्मार्ट प्रौद्योगिकी, विरासत और संस्कृति, स्थिरता, शिक्षा और कौशल विकास, जल, कृषि और खाद्य, उभरती हुई प्रौद्योगिकी और आपदा प्रबंधन शामिल हैं। एसआईएच ने भारत के नवाचार परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया है, छात्रों और पेशेवरों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए सशक्त बनाया है। इस सफलता को सुनिश्चित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व एसआईएच पूर्व छात्र नेटवर्क है। इस नेटवर्क के पोर्टल (https://alumni.mic.gov.in/) पर परिवर्तनकारी परिणामों को दर्शाने वाली सफलता की कहानियां उपलब्ध हैं। एसआईएच पूर्व छात्रों द्वारा कई मजबूत सामाजिक आयाम वाले स्टार्टअप सहित आज तक 100 से अधिक स्टार्टअप स्थापित किए जा चुके हैं।

यादव समाज का दीपावली मिलन हुआ सम्पन्न हुआ, आदर्श विवाह, युवक-युवती परिचय सम्मेलन 16 फरवरी को

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ झेरिया यादव समाज पंजीयन क्र. 5066 रायपुर का दीपावली मिलन विगत दिन सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से प्रतिवर्षानुसार यह निर्णय लिया गया कि महानगर इकाई एवं जिला तथा महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय प्रदेश स्तरीय सामाजिक सम्मेलन, आदर्श सामुहिक विवाह, युवक-युवती परिचय सम्मेलन, सामाजिक विभूतियों का सम्मान मेघावी छात्र-छात्रा सम्मान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, निःशुल्क 11 जोड़ो का आदर्श विवाह प्रधान कार्यालय, महादेव घाट रायपुरा में कार्यक्रम 16 फरवरी 2025 दिन रविवार सुबह 11-00 बजे से यादव सामाजिक भवन महादेवघाट रायपुरा रायपुर में रखा गया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथी माननीय श्री जगनीक यादव जी प्रदेश अध्यक्ष छत्तीसगढ झेरिया यादव समाज, अध्यक्षता माननीय श्री सुन्दर लाल यादव जी अध्यक्ष रायपुर महानगर इकाई छ.ग. झेरिया यादव समाज, विशिष्ठ अतिथीगण माननीय श्री भगत सिंह यादव जी प्रदेश उपाध्यक्ष, माननीय श्री जी.आर. यादव जी प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री मनोज यादव जी, प्रदेश सं. सचिव माननीय श्री आर.डी. यादव जी, श्री रंजीत यादव जी प्रबंधकारिण सदस्य, श्री जगत राम यादव जी, सुकालू राम यादव, श्री दशरथ लाल यादव, श्री डी.आर. यादव जी, सरंक्षक, श्रीमती आशा संतोष यादव, प्रदेश अध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ), श्री राजू यादव जी प्रदेश अध्यक्ष (राजनीतिक प्रकोष्ठ) माननीय श्री मानसाय यादव जी, प्रदेश अध्यक्ष (अधिकारी एवं कर्मचारी प्रकोष्ठ), माननीय श्री आकाश यादव जी, प्रदेश अध्यक्ष (युवा प्रकोष्ठ), श्री शंशिकांत यादव जी पत्रकार एवं समाज के मिडिया प्रभारी होंगे। सामाजिक सम्मेलन उद्घाटन समारोह युवक-युवती परिचय सम्मेलन को ऐतिहासिक कार्यक्रम को सफल बनाने महानगर इकाई के शत्रुघन यादव वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री प्रीतम यादव कार्यकारिणी अध्यक्ष, श्री परदेशी यादव, न्या, प्र.अ., श्री बैसाखू राम यादव सचिव, श्री मतवारी यादव कोषाध्यक्ष, श्री नरेश यादव संयुक्त सचिव, श्री रामस्वरूप यादव, लेखापाल, श्री घुरूउ राम यादव, श्री सुरेन्द्र यादव, श्री सुखराम यादव, श्री पंचराम यादव आदि यादव बन्धु दौरा कर प्रचार प्रसार कर रहे है। इस मौके पर प्रदेश भर के प्रबंधकारिणी सदस्यों 36 जिलों के अध्यक्ष, ब्लाक अध्यक्ष परिक्षेत्र अध्यक्ष, शहर अध्यक्ष, समस्त झेरिया समाज के आजीव सदस्य तथा रायपुर शहर 70 वार्ड ग्रामीण के 40 वार्ड के आठ से दस हजार यादव बन्धु अपनी उपस्थिति देंगे। उक्त जानकारी प्रेस विज्ञप्ति में श्री सुन्दर लाल यादव शहर अध्यक्ष ने दी।

खर्चीली शादी को त्यागने आदर्श विवाह करने पर जोर

विधायक भावना बोहरा ने पांडातराई के वार्डों में किया दौरा, जनता की समस्याओं का निराकरण करने अधिकारियों को दिए दिशा-निर्देश

पंडरिया (विश्व परिवार)। जनता की समस्या हो या क्षेत्र में विकास कार्यों की सौगात, पंडरिया विधायक भावना बोहरा द्वारा लगातार इसके लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। आज पांडातराई में भी भावना बोहरा ने जनसंपर्क किया और क्षेत्रवासियों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं का समाधान किया। इस दौरान उन्होंने पांडातराई महाविद्यालय का औचक निरीक्षण किया एवं विद्यार्थियों की सुविधा व शिक्षा को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। मंगलवार को पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने पांडातराई के वार्ड क्रमांक 6 एवं 9 में सघन जनसंपर्क कर क्षेत्रवासियों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं का निराकरण किया।

इस अवसर पर विधायक भावना बोहरा ने कहा कि जनता से लगातार संपर्क और संवाद से ही क्षेत्र का विकास संभव है। हमने यह लक्ष्य निर्धारित किया है कि जितना ज्यादा हो सके जनता से सीधे संवाद करें, उनके सुझाव प्राप्त करे और उसका निराकरण कर क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करें। यह सब जनता और जनप्रतिनिधि के आपसी सामंजस्य से ही पूरा होगा। इसलिए हमने यह पहल शुरू की है और जनता का भी इसमें भरपूर सहयोग मिल रहा है। हमने महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की सुविधा और शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर भी आज महाविद्यालय का औचक निरीक्षण किया। विद्यार्थियों से शिक्षा, शिक्षकों एवं महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं को लेकर भी चर्चा की और वहां जो समस्याएं सामने आई है उसे तत्काल दूर करने के लिए शासन व महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों को निर्देश दिए हैं।

विगत एक वर्ष में इसी जनसंवाद एवं क्षेत्रवासियों के मार्गदर्शन से हम लगातार पूरे पंडरिया विधानसभा में विकास कार्यों की सौगात जनता को समर्पित कर रहें हैं। सड़क, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं से लेकर अधोसंरचना विकास के कार्य भी लगातार हो रहें हैं। यह सभी विकास कार्य आने वाले समय मे जनता की सुविधा एवं क्षेत्र के विकास को नई गति एवं दिशा देंगे।

उन्होंने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार विकसित भारत-विकसित छत्तीसगढ़ के लक्ष्य को निर्धारित करके निरंतर कार्य कर रही है। यह लक्ष्य तभी संभव हो सकता है जब हम जनता की सुविधाओं का विस्तार करें, अधोसंरचनाओं का विकास करें एवं जनहित के लिए चलाई जा रही योजनाओं का जमीनी स्तर तक क्रियान्वयन करें, जिसके लिए हमें जनता के बीच जाना होगा। एक जनप्रतिनिधि का कार्य यही है कि वह अपने क्षेत्रवासियों के लिए हमेशा उपलब्ध रहे, उनकी समस्याओं को सुनें, क्षेत्र की प्रगति के लिए उनके सुझावों पर अमल करें, इसलिए हम लगातार जनसंपर्क के माध्यम से जनता के समक्ष पहुंचकर हर संभव प्रयास कर रहें हैं जिससे जनता को सुविधा मिले, क्षेत्र की प्रगति हो और पंडरिया विधानसभा को समृद्ध बनाने के हमारे लक्ष्य को हम प्राप्त कर सकें।

हर्बल उत्पादों से महिलाएं हो रही आत्मनिर्भर, आधुनिक ब्रांडिंग और विशेषज्ञों द्वारा 13 उत्पादों को बाजार में मिली नई पहचान

केशोडार पीवीटीजी वन धन विकास केंद्र से ग्रामीण महिलाओं के जीवन में आ रहा सकारात्मक बदलाव

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य में वन विभाग द्वारा स्थापित वन धन विकास केन्द्र में आयमूलक गतिविधियां संचालित की जा रही है। इस संस्था से जुड़कर वनांचल के लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। आधुनिक ब्रांडिंग और विशेषज्ञों के प्रशिक्षण से इन उत्पादों को बाजार में नई पहचान मिली है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में वन धन विकास केंद्र केशोड़ार की महिलाओं ने लगभग 82 लाख 50 हजार रूपए की हर्बल उत्पादों का विक्रय किया, जिसमें केन्द्र को 15 लाख रूपए की शुद्ध आय हुई है। यह पीवीटीजी वनधन विकास केंद्र की महिलाओं को स्थायी आजीविका प्रदान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

गरियाबंद जिले के केशोड़ार गांव में स्थित पीवीटीजी (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह की महिलाएं) वन-धन विकास केंद्र से परंपरागत ज्ञान और आधुनिक तकनीक की सहायता से ग्रामीण महिलाओं के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव आया है। सभी महिलाएं आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रही हैं। प्रधानमंत्री जनमन योजनांतर्गत स्थापित यह केंद्र भुतेश्वर नाथ हर्बल एण्ड मेडिसिन स्व-सहायता समूह द्वारा संचालित की जा रही है।

इस केंद्र से 87 पीवीटीजी लाभार्थी महिलाएं जुड़ी हुई हैं, जो 8 स्व-सहायता समूहों के माध्यम से कार्य कर रही हैं। इन केन्द्रों में महिलाओं के समूह द्वारा हर्बल औषधियों का उत्पादन किया जा रहा है। आयुष निर्देशालय (आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी) से अनुमोदित 13 हर्बल उत्पाद बनाई जा रही है, जिनमें महाविपगर्भ तेल, भृंगराज तेल, तुलसी चूर्ण, अमलाक्यादि चूर्ण, नवायस चूर्ण, कौंच चूर्ण, शतावरी चूर्ण, अश्वगंधा चूर्ण, क्रीमिघ्न चूर्ण, प्रदारांतक चूर्ण, पुनर्नवा चूर्ण, सर्वज्वरहर चूर्ण और वैश्वानर चूर्ण है। इन उत्पादों को छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा बाजार में विपणन किया जाता है, जिससे इनकी पहुंच देशभर के उपभोक्ताओं तक हो रही है। स्व-सहायता समूह से जुड़ी सभी पीवीटीजी महिलाएं मुक्त कंठ से प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और वन मंत्री श्री केदार कश्यप को धन्यवाद देते हुए बताती हैं कि पीएम जनमन योजना से उनके जीवन में आर्थिक बदलाव आया है और वे बहुत खुश हैं।

वन विभाग द्वारा महिलाओं को उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा समय-समय पर यह कार्यक्रम आयोजित की जाती है। इन प्रशिक्षणों ने महिलाओं को न केवल कौशल विकास में मदद की, बल्कि उन्हें उत्पादों की गुणवत्ता सुधारने और बाजार की आवश्यकताओं को समझने का अवसर भी प्रदान किया जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा द्वारा महिलाओं को आधुनिक मशीनें और उत्पादन उपकरण प्रदान किए गए हैं, जिससे उत्पादों का समय पर निर्माण और उच्च गुणवत्ता भी सुनिश्चित हो रही है। विशेष रूप से, भृंगराज तेल को पारंपरिक तेल पाक विधि से तैयार किया जाता है, जिसमें तिल के तेल में औषधीय जड़ी-बूटियों को सात दिनों तक पकाया जाता है। यह तेल बालों की देखभाल के लिए अत्यधिक प्रभावी है, जो बालों का झड़ना रोकता है और उनकी वृद्धि करता है साथ ही बालों की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। इसके अलावा महाविषगर्भ तेल, जो पीठ और जोड़ों के दर्द के लिए उपयोगी है, केंद्र का एक और लोकप्रिय उत्पाद है। पीवीटीजी वन-धन विकास केंद्र, केशोड़ार केवल उत्पादों का निर्माण नहीं कर रहा है, बल्कि एक परंपरा और ज्ञान को संरक्षित कर बढ़ावा दे रहा है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354